CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

JYOTISH TIMES
ज्योतिष टाइम्स

मूल्य : १ रुपया (ज्योतिष विज्ञान का प्रमुख हिन्दी मासिक पत्र) (मार्च-अप्रैल, १९७४)

सम्पादक : डा० गोस्वामी गिरिधारीलाल

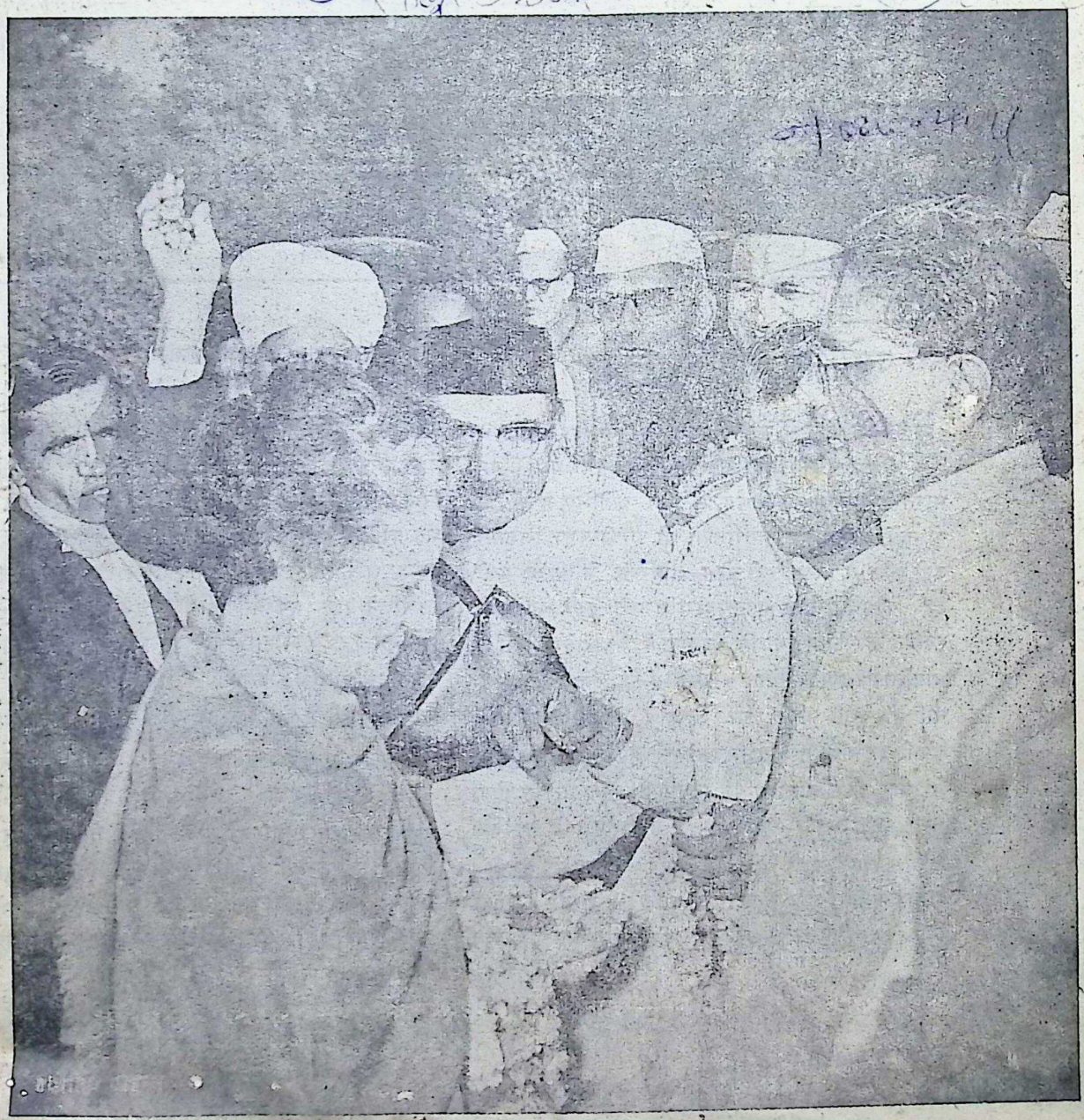

वर्ष १

जीवेम शरदः शतम्
'सौ वर्षों तक स्वस्थ एवं सुखी रहें'

अङ्क ११

anskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योतिष टाइम्स

चैत्र, १८९६, संवत् २०३१, मार्च-अप्रैल, १९७४

॥ तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥

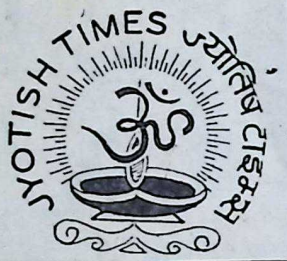

४. आपकी दृष्टि में

५. बाबू जगजीवन राम

८. उत्तर प्रदेश का नया मंत्रिमण्डल —जगन्नाथ मसीन

१०. भारतीय नववर्ष 'प्रभव' संवत्सर का वर्षफल —भास्करानन्द लोहनी

१३. राहु और केतु —माणिक चन्द जैन

१६. स्त्री का रूप और शुक्र —केवल कश्यप

१८. ज्योतिर्विज्ञान —लोक द्रष्टा

२१. लक्ष्मणगढ़ में ज्योतिष महासम्मेलन

२५. श्री शंकर व्यापार भविष्य —पं० शिवचरण शर्मा

२६. आपका मासिक भविष्य —मनु

३०. कुम्भ महापर्व हरिद्वार—

सम्पादकीय

• ज्योतिष का चमत्कार

वैधानिक दृष्टि से उत्तर प्रदेश के चुनाव प्रांतीय थे परन्तु समझ लिया और कह दिया गया था कि यह भारत के भविष्य का निर्णय करेंगे। इसीलिए संपूर्ण देश ही नहीं, संसार की महाशक्तियां भी इनकी तरफ जिज्ञासा भरी दृष्टि से देख रही थी। अमेरिका के विदेश मंत्री डा० किसिजर ने तो अपना दौरा संभवतः इसी कारण से स्थगित कर दिया था कि चुनाव में जो जीतेगा उसी से वार्तालाप किया जायेगा। कहते हैं कि विश्व की राजनीति से खेलने वाले उस विचक्षण राजनीतिज्ञ ने भी अपनी दूर दृष्टि से विपक्षी दलों को ही विजयी होते देखा था और उनके मस्तिष्क पर मानसिक तिलक भी कर दिया था। भारत में भी यही कारण प्रबल था कि इस बार कांग्रेस इस वैतरणी को पार करने में असमर्थ रहेगी। अभाव महंगाई और भ्रष्टाचार आदि उसे ले डूबेंगे। कई विपक्षी दलों ने तो अपनी विजय के शंख भी फूंक दिए थे और उन लोगों के नाम छांट कर रख लिए थे जो प्रदेश की और भविष्य में सम्पूर्ण देश की शासन-सत्ता संभालेंगे। 'ज्योतिष-टाइम्स' को गर्व है कि अनिश्चय के गहन अन्धकार में डूबे ऐसे कलावर्ग में हमारे कतिपय दिग्गज भविष्य वेत्ताओं ने जो भविष्य-वाणियां की वह शत प्रतिशत सही निकलीं। भारतीय ज्योतिष की इस क्षमता और इस चमत्कार को देख कर राष्ट्र की बागडोर सम्भालने वाले तक वैसे ही विस्मय-विमुग्ध हो गये हैं।' जैसे सन १९६४ में अमरीकी राष्ट्रपति श्री लिंडन जानसन के चुनाव काल में 'ज्योतिष टाइम्स' के सम्पादक की भविष्य वाणी से विश्व चकित और स्तध हो गया था।

उत्तर प्रदेश के चुनावों पर 'ज्योतिष टाइम्स' के गत्तांक में सर्व श्री वी० डी० शास्त्री, वी० वी० रमन, राधाकृष्ण शर्मा, भास्करानन्द लोहनी, स्वामी मदनानन्द, हरदेव शर्मा त्रिवेदी, भवानी मिश्र, जगन्नाथ मसीन, गौरी शंकर कपूर, हंसराज शर्मा, मानिक चन्द जैन और ओंकार नाथ त्रिवेदी आदि बारह भविष्य नेताओं ने अपने विचार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकट किये थे और अन्धकार के पर्दे को चीर कर भविष्य सामने रख दिया था। विपक्षी दलों के संदर्भ में इन सब महानुभावों ने एक स्वर से कह दिया था कि उनकी स्थिति में सुधार होगा परन्तु इनमें से कोई सत्ता में नहीं आ सकता। चुनाव परिणामों के अनुसार भारतीय कांति दल जनसंघ और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को पहले की अपेक्षा अधिक स्थान मिले हैं। परन्तु क्रांतिदल और जनसंघ को यह आशा प्राप्त नहीं हुई कि वह शासन का सूत्र अपने हाथ में ले लेंगे।

कांग्रेस के संदर्भ में इन बारह महानुभावों में से २ ने धारणा प्रकट की थी कि चुनाव के बाद की स्थिति स्पष्ट नहीं होगी जबकि ३ ने कहा था कि नई कांग्रेस को काम चलाऊ बहुमत मिल जायेगा और ७ ने दृढ़ एवं गंभीर शब्दों में घोषणा की थी कि काँग्रेस को पूर्ण विजय प्राप्त होगी और श्री बहुगुणा उत्तम प्रकार से अपना मन्त्रिमण्डल बनाने में सफल होंगे। 'ज्योतिष टाइम्स' का चुनाव अंक जब प्रकाशित हुआ था तब कई भद्रपुरुषों के मुखमण्डल पर सन्देह और अविश्वास प्रकट करने वाली मुद्रा दीख पड़ी थी, कई ने अपनी ऐसी धारणा को शब्दों का रूप भी दिया था परन्तु निर्वाचन द्वन्द्व में सन् '६९ की अपेक्षा अधिक स्थान लेकर कांग्रेस ने सिद्ध कर दिया है कि ज्योतिष की निर्मल दृष्टि गहन भविष्य को जल-वत तरल रूप में मूर्त कर देने की पूर्ण क्षमता रखती है।

कांग्रेस को उसकी इस आशातीत विजय पर बधाई मिल चुकी है। ज्योतिष विज्ञान की इस विजय पर भी बधाई के अनेक पत्र और संदेश हमारे पास आये हैं। कागज की कठिनाई के इस काल में उनका प्रकाशन संभव नहीं है अतएव उन तमाम पत्रों और सन्देशों के लिए ज्योतिष जगत की ओर से सविनय कृतज्ञता प्रकट करते हुए हम निवेदन करना चाहते हैं कि मानव जीवन के प्रत्येक अंग और प्रत्येक कोने को उजागर करने वाले इस पूर्ण विज्ञान की क्षमता को और भी अधिक गंभीरता के साथ समझने की आवश्यकता है। अब ऐसी व्यवस्था की मांग को पूर्ण करने में विलम्ब न होना चाहिए जिससे यह ज्योतिष विज्ञान कालगत त्रुटियों को सुधार कर और भी अधिक समर्थ एवं शक्ति सम्पन्न हो जाये।

'ज्योतिष टाइम्स' के अक्टूबर अंक में हमने आल इन्डिया मैडिकल इंस्टीट्यूट आफ मैडिकल साइंस की स्थापना का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। शासन के सर्वोच्च स्थानों पर बैठी हुई कई शक्तियों ने उस उपयोगी योजना पर गौर किया है परन्तु परिणाम अभी तक नहीं हुआ। हम चाहते हैं कि ज्योतिष-विज्ञान की क्षमता और महत्ता के इस प्रकाश में उस योजना पर विचार किया जाये और उसकी दशा में सक्रिय पग उठाया जाये।

अंत में अपनी यह कामना हम फिर दोहराते हैं कि उत्तर प्रदेश के चुनावों से भारत का भविष्य स्पष्ट हुआ है उसे विषम परिस्थितियों से निपटाने वाली कल्याणी क्षमता प्राप्त हो और वह सर्वेभवंतु सुखिनः की महान नीति का आचरण करती हुई संसार में भारत का मुख उज्वल करे ?

डा० गोस्वामी विदेश यात्रा पर

बैंकांक में ज्योतिष महासम्मेलन

संस्कृत स्वाध्याय तथा ज्योतिष विज्ञान मंदिर के निदेशक, अखिल भारतीय सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा और अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन के महामंत्री तथा ज्योतिष टाइम्स के मुख्य सम्पादक डा० गोस्वामी गिरिधारी लाल, हिन्दू धर्म सभा बैंकांक (थाइलैंड) के निमन्त्रण पर रामचरित्र मानस चतुशती समापन समारोह और ज्योतिष महा-सम्मेलन में भाग लेने के लिए आजकल बैंकांक की यात्रा पर गए हुए हैं।

डा० गोस्वामी बैंकांक में होने वाले प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय ज्योतिष महा-सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे।

थाइलैंड के अतिरिक्त डा० गोस्वामी दक्षिण पूर्व एशिया के कई देशों की भी यात्रा करेंगे।

हम अपने प्रिय पाठकों को—

बैंकांक में होने वाले ज्योतिष सम्मेलन की विस्तृत जानकारी अगले अंक में देंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

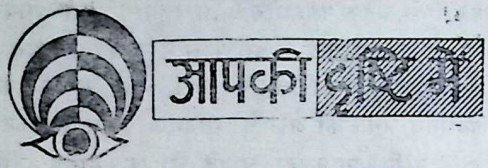

जनसाधारण तक पहुंचाने का श्लाघनीय कार्य

मुझे हाल ही में ज्योतिष टाइम्स के कतिपय अंक देखने को मिले। मैंने इनमें से अधिकांश को पढ़ा और बहुत रूचिकर एवं ज्ञानवर्धक पाया। लेखों का चयन इसमें बहुत सुन्दर है। सज्जा भी इसकी आकर्षक है। सम्पादक की कुशलता इसमें पदे-पदे झलकती है।

ज्योतिष हमारे देश की बहुत प्राचीन विद्या है। वेदांगों में इसका परिगणन किया जाता है। प्राचीन ऋषियों एवं ज्ञानियों ने अपनी ऋतम्भरा अतीतानागतपरिवेदिनी प्रज्ञा से बिना आधुनिक यन्त्रों एवं उपकरणों के ग्रहों, नक्षत्रों तथा राशियों के गहन तत्त्व को साक्षात् कर लिया था और मानव जीवन पर उनके प्रभाव को भी पहिचान लिया था। अपने चिन्तन को भावी सन्तति तक पहुंचाने की दृष्टि से उन्होंने सहस्रों ग्रन्थों की रचना भी की थी। उन ग्रन्थों में भरे ज्ञान को जनसाधारण तक पहुंचाने का, ज्योतिर्विद्या के सही स्वरूप को जनता को अवगत कराने का, श्लाघनीय कार्य ज्योतिष टाइम्स कर रहा है। एतदर्थ यह साधुवाद का पात्र है।

सत्यव्रत शास्त्री

आचार्य एवं अध्यक्ष
संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

असंदिग्ध उपादेयता

आपके सम्पादन में प्रकाशित पत्रिका देखी। अद्भुत। इस दिशा में आपका यह कार्य अछूता एवं श्लाघनीय है। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकारें।

ज्योतिष विद्या जैसे गूढ़ एवं जटिल विषय को जन रुचि के स्तर पर लाना, अपने आप में एक कठिन कार्य है, किंतु पत्रिका को देखकर लगा, आप जैसे ज्योतिष शास्त्री का परस पाकर जटिलता अपना स्वभाव भूलकर रोचकता का वरण कर बैठी है।

पत्रिका की उपादेयता असंदिग्ध है। आशा है, आप आगे भी पत्रिका पढ़ने का अवसर देंगे।

शुभकामनाओं सहित—

जयप्रकाश भारती

सम्पादक
नन्दन, 'हिन्दुस्तान टाइम्स', नई दिल्ली

अरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम् —अथर्ववेद
उन्नत होना और आगे बढ़ना प्रत्येक जीव का लक्ष्य है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६७वें जन्म दिवस के अवसर पर

राष्ट्रनायक :

बाबू जगजीवन राम जी

भारतीय संस्कृति के पोषक और देश के राष्ट्रनायक बाबू जगजीवन राम अपने संघर्षपूर्ण जीवन के ६७वें वर्ष में पदार्पण कर रहे हैं, समूचा राष्ट्र अपने लोक नायक के प्रति शुभ कामना व्यक्त कर रहा है।

बाबू जी ने अपना सारा जीवन भारतीय संस्कृति और देश के निमित अर्पित कर दिया। यह कहना गलत न होगा कि आधुनिक भारतीय इतिहास पर बाबू जी के कार्य-शैली की अमिट छाप है। देश के इस महान नेता ने राष्ट्र को एक नयी दिशा प्रदान की। महान कार्यों को उनकी जन्म-कुण्डली से मिलाने पर ऐसा लगता है कि मानों नियति ने उन्हें देश और संस्कृति की रक्षा के लिए ही भेजा है।

बाबू जी का जन्म आरा, बिहार में 5/4 १९१८ को प्रातः सूर्योदय से १८ मिनट पूर्व ५ बजकर २३ मिनट पर हुआ। आपकी जन्म कुण्डली तथा ग्रह स्थिति निम्न प्रकार से है।

ग्रह स्पष्ट—

सूर्य ११-१२-१४, चन्द्र १-१०-२०, मंगल १-५-४३, बुध १०-२६-५, गुरु ३-११-३, शुक्र १-६-२९, शनि ११-९-२८, राहु २-१६-५२, लग्न ११-९-३९

जन्म कुण्डली

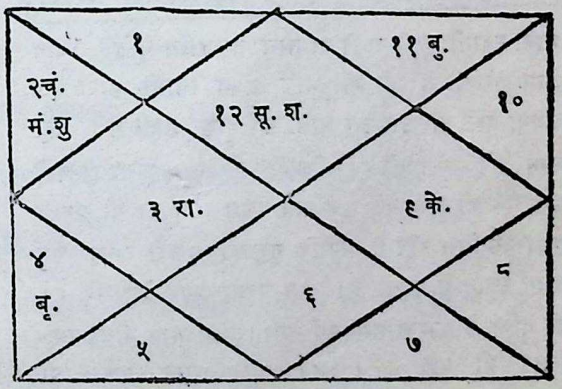

जन्म समय चन्द्र स्पष्ट १-१०-२० होने से विंशोत्तरी दशा पद्धति के अनुसार चन्द्र की महादशा के शेष वर्षादि ९-९-० और दशा क्रम इस प्रकार था।

चन्द्र — ९-९-० मंगल — ७-०-०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राहु — १८-०-० गुरु — १६-०-०
शनि —१६-०-० आदि

सबसे पहली बात जो इस कुण्डली में दृष्टिगोचर होती है वह गुरु की उच्चता है गुरु की इस उच्चता का अर्थ है कि लग्न तथा सूर्य लग्न दोनों असाधारण रूप से बलवान हैं क्योंकि गुरु, सूर्य लग्न के भी स्वामी है और लग्न भी। इतना ही नहीं, गुरु भी उच्च है इसकी दृष्टि भी लग्न पर पूर्ण पड़ रही है जिसके फलस्वरूप लग्न और सूर्य लग्न दोनों बलशाली हो चुके हैं क्योंकि ज्योतिष शास्त्र का प्रसिद्ध नियम है कि "यो यो

नवांश कुण्डली

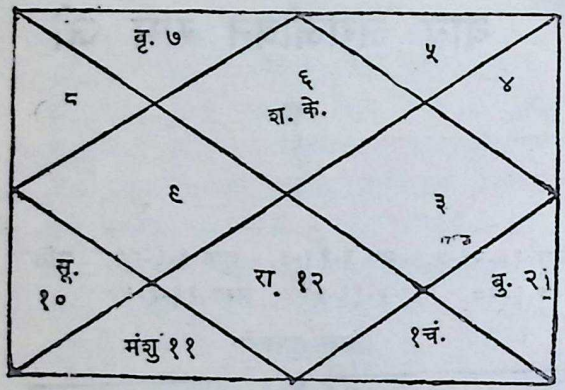

भावः स्वामी युक्तो दृष्टो वा तस्य तस्यास्ति वृद्धि" अर्थात जन्म कुण्डली में जो जो भाव अपने स्वामी द्वारा युक्त अथवा दृष्ट हो उस-उस भाव की वृद्धि होती है। यहां लग्न और सूर्य दोनों की वृद्धि हो रही है। इतना ही क्यों उक्त गुरु की दृष्टि का शुभ फल दशम भाव को भी अच्छी प्रकार से मिल रहा है क्योंकि गुरु की दूसरी राशि धनु दशम स्थान में पड़ती है। इस प्रकार हमने देखा कि गुरु की दृष्टि के कारण लग्न सूर्य तथा दशम भाव तीनों प्रफुल्लित हो रहे हैं। अब चूंकि लग्न सूर्य तथा दशम भाव इन तीनों में प्रतिष्ठा है। यह योग मान प्रतिष्ठा तथा यश के बढ़ाने वाला है और साथ ही साथ राज्य सत्ता दिलाने वाला भी है।

गुर की उच्च स्थिति का अध्ययन हम कई प्रकार से कर सकते हैं। एक प्रकार का उल्लेख तो हम कर चुके हैं। दूसरा प्रकार दशम भाव के गुरु के आधिपत्य द्वारा उत्पन्न होता है। यहां यह बात नोट करने की है कि गुरु की मूल त्रिकोण राशि धनु दशम स्थान में है। दूसरे शब्दों में गुरु मुख्यतया दशम अर्थात राज्य भाव का फल करेगा। अब एक और बात यह भी नोट कीजिये कि दशमेश होकर गुरु तो उच्च है ही गुरु जिस राशि में अर्थात कर्क में उच्च हुआ है उसका स्वामी चन्द्र पुनः उच्च है। ऐसी स्थिति दशम भाव के लिए अर्थात राज्य के अधिकार के लिए विशेष रूप से लाभ-प्रद है। यही कारण है कि कई मंत्रिमंडल आए और गये परन्तु बाबू जी के यश एवं राजसत्ता अधिकार में कोई अन्तर नहीं पड़ा।

यह लग्न स्थिति तो लग्न से तथा सूर्य से दशमेश की हुई। अब आइये चन्द्र लग्न से दशमेश की स्थिति पर भी तनिक विचार कर लें क्योंकि जो फल लग्न से और चन्द्र लग्न दोनों से प्राप्त होता हो वह स्थायी, मूल्यवान तथा मिश्रित होता है। चन्द्र लग्न से दशम भाव का स्वामी शनि हैं और वह राज्य "कारक" सूर्य के साथ स्थित है। इन दोनों राज्य द्योतक ग्रहों की स्थिति चन्द्र लग्न से लाभ स्थान में हुई है जिसका अर्थ है राज्य की प्राप्ति अत्यन्त लाभ उच्च गुरु कि इन दोनों पर दृष्टि ने उस प्राप्ति को और भी शक्तिशाली और निश्चित बना दिया है। इस प्रकार राज्य की प्राप्ति लग्न चन्द्र लग्न और सूर्य लग्न तीनों ही लग्नों से सिद्ध होती है।

गुरु की उच्चता को आप पञ्चम भाव की दृष्टिकोण से भी विचार सकते हैं। उच्च गुरु की पञ्चम भाव में स्थिति पञ्चम भाव को बढ़ाती है इसमें किसी को क्या संदेह हो सकता है? पञ्चम भाव मन्त्रणा शक्ति तथा विचार शक्ति का माना गया है अतः स्पष्ट है कि बाबू जी में देश की समस्याओं को तथा राजनीति को परखने तथा जांचने की सूझबूझ असाधारण रूप से विद्यमान है।

गुरु की दृष्टि प्रायः उस भाव को बढ़ाती और ऊंचा करती है जिस पर कि यह पड़ रही हो और जिस भाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर यह दृष्टि पड़ रही हो यदि उस भाव का स्वामी भी इस भाव को देखता है तब तो जैसा हम कह आये हैं उस भाव की विशेष वृद्धि होती है। बाबू जी की कुण्डली में मंगल अपनी पूर्ण सप्तम दृष्टि से भाग्य भवन अर्थात नवम घर को देखता है और उच्च गुरु उसी नवम भाव को अपनी पञ्चम पूर्ण दृष्टि से प्रभावित कर रहा है। परिणाम यह कि नवम भाव असाधारण रूप से खिल उठा है। नवम भाव सर्वोत्तम भाव है। यह भाव राज्य-कृपा, दैवी-कृपा, भाग्य तथा धर्म सभी का द्योतक है। फल यह निकला कि राज्य की प्राप्ति दशम के अतिरिक्त नवम भाव से भी हो गई।

जिस प्रकार गुरु की निज राशि पर दृष्टि के फल स्वरूप शुभ फल की प्राप्ति उस राशि वाले भाव के अतिरिक्त दूसरी राशि धनु वाले भाव को भी हुई, इसी मंगल के निज भाव (नवम) पर दृष्टि का शुभ फल द्वितीय भाव को भी मिला रहा है जहां की मंगल की दूसरी राशि अर्थात मेघ राशि विद्यमान है। दूसरे शब्दों में धन भाव की असाधारण वृद्धि भी साथ ही साथ हो गई।

लग्न से नवम भाव का अध्ययन हमने किया। अब आइये चन्द्र लग्न से भाव को देखें। चन्द्र लग्न से नवम भाव का स्वामी शनि है, उस पर और नवम भाव दोनों पर गुरु की पूर्ण दृष्टि है, अतः चन्द्र लग्न से नवम भाव भी पर्याप्त रूप से बली है। सूर्य लग्न से, चन्द्र लग्न से तथा लग्न से नवम भाव अथवा उसके स्वामी का बलवान होना जहाँ राज्यसत्ता और धन देता है वहां वह योग धर्म में रुचि भी उत्पन्न करता है और धर्म शास्त्रों के अध्ययन को बढ़ाता है। अतः यह योग बाबू जी की प्रवृत्ति का सूचक है।

ज्योतिष शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए यह कुण्डली बहुत शिक्षा-प्रद है। जन्म समय पर चन्द्र दशा के शेष वर्षादि ६-६-० थे। इस प्रकार ६४-४-१२ अर्थात १७-८-१९७२ से शनि की महादशा में राहु की भुक्ति चल रही है।

यह भुक्ति २-१०-६ वर्ष रहती है अर्थात २३-६-१९७५ तक रहेगी। राहु एक छाया ग्रह है। यह ग्रह अपना फल न देकर उन ग्रहों का फल करता है जिनके द्वारा यह प्रभावित होता है। इस कुण्डली में मुख्यतया राहु पर गुरु मंगल और सूर्य दशम में स्थित होकर प्रभाव डाल रहे हैं, अतः राहु अपने समय में सूर्य, गुरु तथा मंगल को फल करेगा। **तीनों ग्रह लग्न से मित्र हैं और मीन लग्न के लिये शुभ हैं अतः यह समय राज्य आदि की दृष्टि से बाबू जी के लिए उत्तम चल रहा है।**

———

"माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्या"

-: विशेषांक :-

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अगले मास ज्योतिष टाइम्स प्रकाशन के दूसरे वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस उपलक्ष्य में टाइम्स का पहला विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। आप सब पाठकों और विद्वानों से निवेदन है कि विशेषांक के लिए शीघ्र विचारणीय लेख अथवा विचार भेजकर हमारे प्रयास को सफल बनायें।

विशेषांक में प्रकाशित लेखों को विशेष पारिश्रमिक देने का विचार है—उत्तम तीनों लेखों को पुरस्कार देने की भी योजना है। विद्वान लेखक, लेख के साथ ५० शब्दों में अपना परिचय भी भेजे।

—सम्पादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

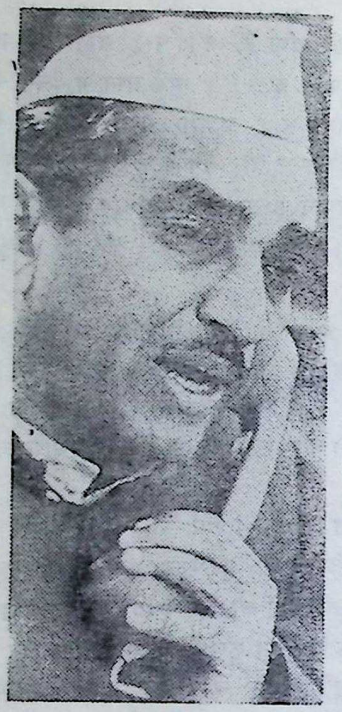

उत्तर-प्रदेश का नया मंत्रिमंडल

जगन्नाथ भसीन

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा के नेतृत्व में कांग्रेस एक बार फिर उ. प्र. मेंसत्तारूढ़ हुई, मंगलवार ५ मार्च १९७४ को लखनऊ में सायंकाल पांच बजे श्री बहुगुणा के नए मंत्रिमण्डल ने शपथ ग्रहण की। ज्योतिष के अनुसार उस समय की जन्म कुण्डली, नई-सरकार की जन्म कुण्डली मानी जा सकती है। अतः पांच मार्च १९७४ की जन्म कुण्डली एवं नवांश कुण्डली तथा ग्रह स्पष्ट नीचे दिये जा रहे हैं।

ग्रहादि स्पष्ट राश्यादि में लग्न ३-२६-३९ सूर्य १०-२१-१, चन्द्र ३-१०-३८, मंगल १-९-५२, बुध १०-४-४५, गुरु १०-५-४८, शुक्र ९-९-१६, शनि २-४-१८, राहु ८-१-३१।

ज्योतिष के विद्यार्थी जानते हैं कि किसी सरकार व्यक्ति अथवा संस्था का दीर्घ जीवी अथवा स्थायी होना उसकी जन्म कुण्डली में लग्न और अष्टम भाव के बलवान होने पर निर्भर करता है। अतः यदि हम यह प्रश्न उठावें कि यह सरकार अल्प जीवी है अथवा दीर्घ जीवी तो इसका निर्णय लग्न तथा अष्टम भाव के विश्लेषण करने पर ही किया जा सकता है।

जन्मकुण्डली

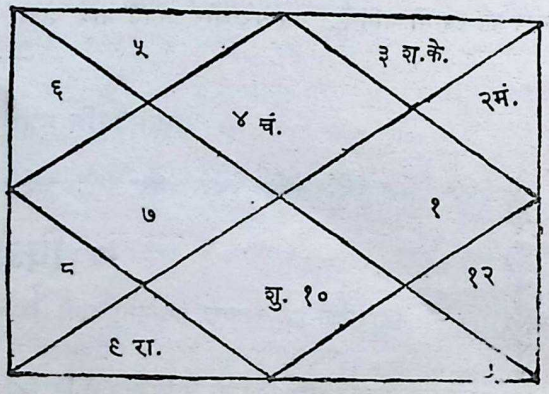

सू. बु. वृ. ११

चन्द्रमा यदि लग्न, पंचम, सप्तम, नवम अथवा द्वादश भाव में यदि पापी ग्रहों के साथ हो और उसको कोई बलवान शुभ ग्रह जैसे शुक्र, बुध अथवा गुरु दृष्टि अथवा युक्ति द्वारा प्रभावित न कर रहा हो तो बालक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नवांशकुण्डली

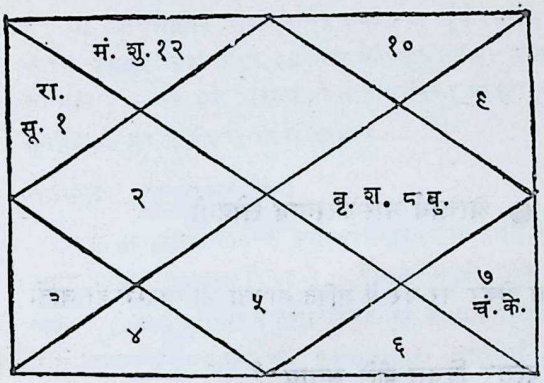

की मृत्यु (अथवा संस्था, सरकार आदि की मृत्यु) जन्म के शीघ्र बाद ही हो जाती है। कहने का भाव यह कि चन्द्रमा लग्न में अल्पायु देता है जब तक कि यह लग्न में बलवान स्थिति में न हो। लेकिन हम समझते हैं कि उपरोक्त जन्म कुण्डली में चन्द्रमा लग्न में काफी बलवान है क्योंकि :—

(क) चन्द्रमा सूर्य से छठे पर्याप्त दूरी पर है अतः "पक्षबल" में (जो कि उसका मुख्य बल है) बली है।

(ख) चन्द्रमा स्वक्षेत्र अर्थात कर्क निज राशि में है अतः बलवान है।

(ग) लग्न तथा लग्नेश एक नैसर्गिक शुभ ग्रह अर्थात शुक्र द्वारा दृष्ट है अतः बलवान है।

यह ध्यान रहे कि चन्द्रमा के बलवान होने का अर्थ यह है कि लग्न लग्नेश, चन्द्र लग्न और चन्द्र लग्नेश चारों बलवान हैं।

अष्टम भाव में अधिकांश शुभ ग्रह हैं और अष्टमेश शनि जो कि आयुष्य कारक भी है गुरु द्वारा दृष्ट है ऐसी स्थिति में कहना पड़ेगा कि अष्टम अष्ममेश भी पर्याप्त बली है जिसका अर्थ वही कि सरकार काफी स्थायी है।

दोनों लग्नों अर्थात लग्न तथा चन्द्र लग्न से दशम भाव का स्वामी मंगल निज राशि वृश्चिक को देखता है जिसका फल दशम भाव को भी मिलता है जिसमें कि मंगल की द्वितीय राशि स्थित है। इस प्रकार दशम भाव अर्थात राज्य सत्ता का मान भी बलवान है। अतः यह सभी योग सरकार को स्थायी बनाते हैं।

एक प्रमुख ग्रह सूर्य निज राशि सिंह को द्वितीय स्थान में पूर्ण दृष्टि से देख रहा है और साथ ही सूर्य तथा द्वितीय भाव पर गुरु तथा बुध का शुभ प्रभाव है। इसका अर्थ यह हुआ कि आर्थिक क्षेत्र में उत्तर प्रदेश सरकार काफी बड़ी योजनाओं को हाथ में लेगी, परन्तु वह इसमें बहुत थोड़ी मात्रा में सफल हो सकेगी क्योंकि लग्नों के शत्रु शनि की सीधी दृष्टि द्वितीय स्थान पर भी हैं और उसकी दृष्टि केतु के माध्यम से द्वितीयेश सूर्य पर भी है। शनि न्यूनता का सूचक है। शनि अधिष्टित राशि का स्वामी बुध भी न्यूनता सूचक है। षष्टेश गुरु भी न्यूनता सूचक है अतः आर्थिक न्यूनता सरकार के रास्ते में बहुत बड़ी बाधा रहेगी।

चन्द्र स्पष्ट ३-१०-३८ है। अतः शपथ के समय विन्शोत्तरी दशा पद्धति के अनुसार शनि की महादशा के शेष वर्षादि ८-७-५ थे। अतः शपथ समय पर शनि की महादशा में शुक्र की भुक्ति के शेष वर्षादि १-४-१६ थे। इसका अर्थ यह हुआ कि शपथ समय पर लग्नों के शत्रु ग्रहों शनि और शुक्र का सिक्का चल रहा था। अतः निस्सन्देह आरम्भ का समय सरकार के लिए संघर्षमय, शत्रुता पूर्ण डांवाडोल करने वाला है। कर्क लग्न के सम्बन्ध में देव केरल (चन्द्र कला साड़ी—गोयल एण्ड कम्पनी, दरीबा दिल्ली) ने पृष्ठ ४२ पर श्लोक ४२९ में लिखा है:—

"लाभाधिव दशाकाले शनि भुतौ महा विपन् गुरु भुक्तौ मनस्तापं शुभाशुभ फलं समय"

अर्थात लाभाधिपति शुक्र की महादशा तथा शनि की भुक्ति में कर्क लग्न वालों को महान् विपत्ति का सामना करना पड़ता है।

चूंकि मुक्तिनाथ शुक्र की मूल त्रिकोण राशि तुला चतुर्थ भाव अर्थात जनता के भाव में पड़ती है अतः शुक्र अपनी भुक्ति में जनता से खूब विरोध दिखलाएगा इसमें सन्देह नहीं। उसका एक मुख्य कारण यह है कि शुक्र जो मुक्ति नाथ है वह मंगल अधिष्ठित राशि का स्वामी है और मंगल कर्क लग्न के लिए राजयोग कारक ग्रह है। अतः निष्कर्ष यह कि जन्मकुण्डली में स्थायित्व के चिन्ह होते हुए भी वर्तमान काल शत्रुत्व तथा भय से पूर्ण है परन्तु इस पर विजय की आशा करनी चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारतीय नववर्ष "प्रभव" संवत्सर का वर्षफल

● आचार्य भास्करानन्द लोहनी

संवत्सर हमारा राष्ट्रीय पर्व है, स्वाधीनता का पर्व है, वैज्ञानिक पर्व है, जिसके साथ अनेकों ऐतिहासिक तथ्य जुड़े हुए हैं। ज्योतिष की गणनानुसार (जिससे आधुनिक वैज्ञानिक भी सहमत हैं) । आज ही के दिन इस पृथ्वी पर मानव सृष्टि का श्रीगणेश हुआ था। इस प्रकार आज का दिन मानव जाति के जन्म का भी दिन है।

गणित की मान्यता के अनुसार आज से १९७२ ९४९०७५ वर्ष पूर्व इस पृथ्वी पर जीवधारियों की वर्तमान सृष्टि चक्र का श्रीगणेश हुआ था और आज से १९५५८८५०७५ वर्ष पूर्व पृथ्वी पर वर्तमान मानव सृष्टि आरम्भ हुई थी। इस दीर्घकाल में २८ बार सत्ययुग त्रेतायुग और द्वापर युग व्यतीत हो गये तथा कलियुग भी २७ चक्र पूरा कर वर्तमान में २८ वीं बार चल रहा है। जिसके इस वर्ष ५०७५ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं तथा ४२६९२५ वर्ष और शेष हैं।

आज ही के दिन २०३१ वर्ष पूर्व सम्वत् के प्रवर्तक सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने और उसके १३५ वर्ष बाद सम्राट शालिवहन ने विदेशी एवं आक्रमणकारी शकों एवं हूणों को पराजित कर देश की स्वतंत्रता की रक्षा की थी। इस प्रकार संवत्सर दिन एक राष्ट्रीय पर्व भी है और उसका वैसा ही महत्व है जैसा कि वर्तमान में स्वतन्त्रता दिवस या गणतंत्र दिवस का।

इस प्रकार संवत्सर दिवस आत्मरक्षा, राष्ट्र-रक्षा राष्ट्र सम्मान, स्वाधीनता का भी स्मरण करता है। यही कारण है कि इस दिन शक्ति की प्रतीक "देवी" की स्थापना होकर घर-घर में शक्ति साधना भी आरम्भ हो जाती है।

संवत्सर दिवस कैसे मनायें ?

"नव वर्षारम्भ पर प्रत्येक घर में ध्वजारोहण, मंगल स्नानादि से उत्सव मनाना चाहिए और अपने इष्ट देवता तथा गणपति का स्मरण कर नूतन वर्षफल सुनना चाहिए और यथाशक्ति दान देना चाहिए आज के दिन संवत्सर का फल (नव वर्ष का वर्षफल) सुनने तथा वकाइन (या नीम) की फूल सहित कोमल पत्तियां, कालीमिर्च काला नमक, हींग जीरा, अजवायन यथोचित अनुपात में लेकर खाने से मनुष्य एक वर्ष पर्यन्त सुखी व निरोग रहता है।

नव वर्ष : कुछ तथ्य

इस वर्ष नववर्षारम्भ अर्थात संवत्सर दिवस पर मेष, सिंह, धनु राशि के और विषुवति संक्रान्ति के अवसर पर वृष, कन्या, मकर राशियों का चन्द्रमा प्रतिकूल (अपेट) होगा, मेष संक्रान्ति, उत्तराषाढ़ा, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र अर्थात् मकर राशि के वामपाद में हैं।

इस वर्ष भारत में दो चुन्द्रग्रहण दृश्य होंगे। पहला खण्डग्रास चन्द्रग्रहण ज्येष्ठा पूर्णिमा (४/५ जून) की रात्रि में २/२ बजे से ५/१५ बजे रहेगा। यह मिथुन, कन्या, मकर, कुम्भ राशियों को शुभफल प्रद है। शेष राशि वाले इसे न देखें।

दूसरा खग्रास चन्दग्रहण कार्तिक पूर्णिमा (२९ नवम्बर) को है जो सायं ७-० बजे से १०-२५ रात तक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहेगा। यह ग्रहण कर्क, सिंह ,धनु, मीन राशियों को शुभ, शेष को प्रतिकूल है।

यों तो वैज्ञानिक दृष्टि से नव वर्षारम्भ सूर्य चन्द्रमा के एक समसूद में आने पर शनिवार की रात (२४ मार्च की प्रातः) २-६२ वजे प्रारम्भ हो जायेगा किन्तु व्यवहारत सूर्योदय से नव वर्षारम्भ माना जायेगा।

वर्षफल : एक दृष्टि में !

इस वर्ष सौरमण्ड़ल ने सूर्य को राजा तथा शनि को प्रधान मन्त्री पद प्रदान किया है। प्रधान मन्त्री शनि के पास रक्षा, सिचाई विभाग तथा राजा सूर्य के पास शरदीय कृषि विभाग है। ग्रीष्म की कृषि, वित्त तथा नीरस (खनिज) विभाग मंगल के पास है, रस पदार्थों दुग्धादि को गुरु देखेंगे और फल विभाग शुक्र के पास है। विश्व ८ संवत्सर का वैश्य के घर निवास है। नर्मदा के उत्तर में इस वर्ष "प्रभव" तथा दक्षिण में "राक्षस" का नाम का संवत्सर रहेगा।

उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए यह वर्ष भी जनता के लिए निराशजनक है। राजा और मन्त्री दोनों क्रूर ग्रह तो हैं ही परस्पर शत्रु भी हैं यद्यपि सम्बन्धों में यह पिता पुत्र हैं। राजा सूर्य जहां कनेर शासक हैं वहाँ शनि उसके विरूद्ध संघर्ष का सूचक है अतः इस वर्ष जहाँ शासन प्रजा के विरूध कठोर रूख अपनायेगा वहाँ श्रमिकों प्रजा-जनों, समाज के दुर्बल अंगों का संघर्ष विषम रूप धारण करेगा। शासन तथा प्रजा के सम्बन्ध अधिक खराब होंगे।

वित्त मन्त्री मंगल है अतः शासन की करनीति भी कठोर होगी।

वर्षा योग इस वर्ष भी सामान्य है, जो कुछ वर्षा होगी वह भी कहीं होगी कहीं नहीं। आँधी एवं हवा तथा अग्नि का प्रकोप भी विशेष होगा। फलतः यत्रतत्र अकर्षण एवं अकाल की स्थिति उत्पन्न होगी। विशेषकर ३ मई से लेकर ३० जून तक भीषण गर्मी पड़ेगी। अगस्त १७ तक वर्षायोग अनुकूल है किन्तु १८ अगस्त से १८ अक्टूबर तक अवर्षण एवं सूखे की सम्भावना है। फलतः शारदीय अन्न की उपज अच्छी न होगी यद्यपि ग्रीष्म की उपज संतोषप्रद होगी वेलदार फसलों जैसे मूंग, उड़द आदि अच्छी होंगी। अन्नोत्पादन कम होगा, फलतः अन्न तेज होगा, नवम्बर-दिसम्बर में मूल्य अत्यधिक होंगे। वित्तमन्त्री मंगल है इसलिए सभी वस्तुओं के भाव खूब चढ़ेंगे मूंगा, ताँबा तथा लालरंग की वस्तुयें विशेष तेज होने की आशा है। आलू, प्याज आदि रसपदार्थ तथा फल अच्छे होंगे।

चोरी डकेती आदि तथा देवी आपदाओं से भी धन-जन की क्षति और अराजकता में वृद्धि के योग हैं। जन स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह वर्ष अच्छा नहीं है, रोग अधिक होंगे, विशेषकर आश्विन में। कफज रोग (टाइफाइड, सर्दी, खांसी, फल्यू आदि) अधिक होंगे।

रक्षाधिकारी शनि है इस लिए विश्व में सैनिक क्रांतियां विशेष होंगी, सैनिकों में अनुशासन हीनता बढ़ेगी।

छात्रों में भी उद्दण्डता बढ़ेगी। सितम्बर-नवम्बर-मध्य केन्द्रीय व राज्य मन्त्रिमण्डलों में भी उलटफेर होगा।

संक्षिप्त वार्षिक राशिफल

मेष—यह वर्ष संतोषप्रद रहेगा। आर्थिक लाभ, नीरोगताप्रद, नाशक तथा अन्य सभी मामलों में शुभ है।

वृष—धनव्य अधिक, सुखशान्ति कम, कामों में रुकावटें एवं विघ्नबाधायें, सेवा राजद्वार तथा व्यापार पक्ष से भी मध्यम, स्वास्थ्य में गिरावट।

मिथुन—स्वास्थ्य मध्यम, सुख-शान्ति में कमी, शत्रु-वृद्धि सूचक योग रहते भी आर्थिक व्यावसायिक, राजस्वरीय मामलों में शुभ समय है। शत्रु उत्पन्न होकर पराजित होंगे। परेशानियां अनुभव कम होंगी।

कर्क—यह वर्ष आपके लिये सन्तोषप्रद नहीं है, व्यय-वृद्धि एवं आकस्मिक व्यय के योग हैं, जोखिम के कामों से बचें। दुखद एवं निराशाजनक वातावरण में मानसिक शान्ति व स्वास्थ्य के लिये भी साधारण है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिंह—आर्थिक तथा व्यावसायिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा है, स्वास्थ्य भी सन्तोषप्रद रहेगा। शत्रु अधिक रहेंगे। कुछ ऐसी घटनाएं घटे जो मानसिक कष्टप्रद हों।

कन्या—स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। मानसिक शान्ति कम रहेगी, सामाजिक वातावरण प्रतिकूल रहेगा। मन में कुविचार उदय होंगे। आर्थिक दृष्टि से लाभ तो रहेगा परन्तु परिश्रम एवं दौड़ धूप अधिक रहेगी।

तुला—शारीरिक स्वास्थ्य हेतु मध्यम वर्ष है किन्तु मानसिक सुख-सन्तोष रहेगा। लाभ रहते भी आर्थिक स्थिति सामान्य ही रहेगी। शत्रु बढ़ेंगे। विशेष परिश्रम से कार्य सिद्ध होंगे, विघ्नबाधायें रहें।

वृश्चिक—यह वर्ष व्यर्थवृद्धि, अकस्मातिक व्ययसूचक है जोखिम के कामों से बचें। पारिवारिक समस्यायें विशेष रहें। स्वास्थ्य भी शिथिल रहेगा। समस्या प्रधान वर्ष है।

धनु—सुख शान्ति कम, स्वास्थ्य शिथिल, अकस्मातिक व्यय एवं हानि की सम्भावना, कामों में विघ्नबाधायें सूचक साधारण वर्ष है। जोखिम के कामों से बचें।

मकर—नीरोगता, सुखशांति, शत्रुपराजय, आर्थिक प्रगति, व्यावसायोन्नति सूचक हर प्रकार शुभ एवं उत्तम वर्ष है। किन्तु विद्यार्थियों के लिये मध्यम जायेगा।

कुंभ—शत्रुवृद्धि, मानसिक शान्ति कम, सेवा पक्ष से मध्यम, व्ययवृद्धि, वादविवाद भय सूचक वर्ष सन्तोषप्रद नहीं है। जोखिम के कामों से बचें। ऐसे संदेश मिलें जिससे मानसिक कष्ट हो।

मीन—शत्रुवृद्धि, सुखशांति कम, मन में कुविचारों का उदय पारिवारिक समस्यायें, व्ययवृद्ध के योग हैं।

४० कैंसरबाग, लखनऊ

TO OPPRESS AND TO HATE IS A SIN

—Swami Vivekannad

'ज्योतिष टाइम्स' नामक हिंदी मासिक-पत्र के संबन्ध में विवरण

फार्म चार—नियम संख्या—आठ

१. प्रकाशन स्थान—२५/३०, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली-८

२. प्रकाशन अवधि—मासिक

३. मुद्रक का नाम—डा० गोस्वामीगिरिधारीलाल
क्या भारत का नागरिक है ?—हाँ
यदि विदेशी है तो मूल देश—नहीं
पता—२५/३०, पूर्वी पटेल नगर,नई दिल्ली-८

४. प्रकाशक का नाम—डा०गोस्वामीगिरिधारीलाल
क्या भारत का नागरिक है ?—हां
यदि विदेशी है तो मूल देश—नहीं
पता—२५/३०, पूर्वी पटेल नगर,नई दिल्ली-८

५. संपादक का नाम—डा०गोस्वामीगिरिधारीलाल
क्या भारत का नागरिक है ?—हां
यदि विदेशी है तो मूल देश—नहीं
पता—२५/३०, पूर्वी पटेल नगर,नई दिल्ली-८

६. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के सांझेदार या हिस्सेदार हों—नहीं

मैं डा० गोस्वामी गिरिधारी लाल, एतद्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

ह० प्रकाशक—गोस्वामी गिरिधारी लाल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राहु और केतु

मूल लेखक :—
माणिकचन्द जैन

अनुवादक :—
रमाकान्त गोस्वामी

आधुनिक समय में फलित ज्योतिष में छाया ग्रहों की अत्यन्त उपेक्षा की जाती है। लेकिन ऐसे राज योगों का क्या लाभ यदि उन्होंने शनि केतु रूपी मगरमच्छ का ग्रास ही बनना है।

सबसे पहली बात तो यह है कि अभी तक यह तय नहीं हो पाया है कि राहु-केतु किन राशियों में लाभकारी सिद्ध होते हैं। पराशर के सिद्धांत के अनुसार सामान्यतः यह माना जाता है कि राहु का उच्च स्थान वृष राशि है और केतु का वृश्चिक। केतु का स्वगृह भी वृश्चिक ही है। राहु का स्वगृह कुम्भ राशि है और उसका मूल त्रिकोण मिथुन है जबकि केतु की मूल त्रिकोण राशि कन्या है। यहां यह भी समझ लेना चाहिए कि राहु शनि जैसा और केतु मंगल का सा पूरा प्रभाव देते हैं।

राहु-केतु की राशियों के बारे में फिलहाल मैं किसी विचार में नहीं पढ़ना चाहता। मैं तो केवल यह बताना चाहता हूं कि अपनी उच्च राशि में स्थित होने पर राहु-केतु २७ नक्षत्रों में से किसी भी नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति को क्या प्रभाव दे सकते हैं।

अश्विनी

राहु : अपने गृह नगर अथवा देश में जातक को विफलताओं के कारण निराश होकर अन्य नगर अथवा देश में जाने को विवश होना पड़ेगा।

केतु : विभिन्न समस्याओं के कारण मन समस्या ग्रस्त रहेगा।

भरणी

राहु : सांसारिक सुखों को त्याग कर जातक सन्यासी या योगी बन जायेगा।

केतु : जातक को अपने जीवन में बार-बार स्थान परिवर्तन करना होगा और उसे शत्रुओं द्वारा उत्पन्न कष्ट सहना पड़ेगा।

कृतिका

राहु : जातक क्रूर, निर्मम एवं दयाहीन होगा।

केतु : जातक बहुत से लतों-का शिकार होगा।

रोहिणी

राहु : जातक दूर देश की यात्रा करेगा।

केतु : जातक का मन अनिश्चयात्मक तथा चरित्र परिवर्तनशील होगा।

मृगाशिर

राहु : जातक धूर्त्त, चोर व जाल साज होगा।

केतु : भोज्य पदार्थों का शौकीन होगा।

आद्रा

राहु : अत्यन्त कामुक प्रकृति हो, भारी दुयोग हो तो अत्यन्त दुराचारी होगा।

केतु : जातक गूंगा अथवा बहरा होगा। कान या जिह्वा में दोष होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुनर्वसु

राहु : क्रूर प्रकृति का होगा।

केतु : विदेश में रहने वाला होगा।

पुष्य

राहु : पेट की गड़बड़ी के कारण भोजन से अरुचि।

केतु : जातक झगड़ालू हो, सन्यासी भी हो सकता है।

अश्लेषा

राहु : जातक अपने माता-पिता, घर अथवा देश के अपमान का कारण बनेगा।

केतु : अन्य मकान, धन अथवा देश को गमन करे।

मघा

राहु : उदार प्रकृति वाला तथा अपने नीचे के मृतकों से लाभान्वित।

केतु : विदेश में रहने का इच्छुक होगा।

पूर्वाफाल्गुनी

राहु : अस्त्र-शस्त्र से आजीविका कमाने वाला, युद्ध सामग्री का निर्माता अथवा सफल योधा।

केतु : देवताओं का भक्त, मन्दिर आदि का निर्माण कर्त्ता।

उत्तराफाल्गुनी

राहु : अपने जन्म स्थान अथवा जन्म भूमि में सफल होगा किसी स्त्री से लाभ उठायेगा।

केतु : एक सुशिक्षित पण्डित होगा।

हस्त

राहु : या तो बच्चों से रहित होगा या फिर बच्चों से उसे कोई लाभ न होगा।

केतु : कारागार जावे अथवा निज घर में ही कैदी रहें।

चित्रा

राहु : लुटेरा, घातक, धोखेबाज, अथवा दूसरों का माल हड़प करने वाला होगा।

केतु : विष पीड़ित होगा। इसकी मृत्यु सर्प दंश से भी सम्भव है।

स्वामी

राहु : हठी और आज्ञा न मानने वाला होगा यदि जातक स्त्री हो तो किसी के साथ भाग जावे।

केतु : महान और मानप्रद कार्य करेगा।

विशाखा

राहु : कष्टदायक अभिचार में कुशल और मन्त्रों का स्वार्थ-परक उपयोग करने वाला होगा।

केतु : कारागार में पड़ जावे अथवा सन्निपात रोग से पीड़ित होगा।

अनुराधा

राहु : दूसरों के विनाश की योजना बनाने वाला। तेज और न हारने वाला प्रतिद्वंद्वी होगा।

केतु : अपने से कम वर्ण अथवा स्तर वाले से असमर्या दिन विवाह करे।

ज्येष्ठा

राहु : वहुधा सारे शरीर पर फोड़े फुंसी वाला।

केतु : विद्वान, विज्ञान अथवा धर्म का शिक्षक अथवा यशस्वी दैवज्ञ होगा।

मूला

राहु : समस्त सांसारिक सुख सुविधाओं से समन्वित होगा।

केतु : दूत कार्य करे—घूमने फिरने के कार्य पर लगा हुआ अथवा अपने पक्ष में करने की वाक् योग्यता वाला हो।

पूर्वाषाढ़ा

राहु : यदि निम्न वर्ग में भी जन्म वाला हो तो भी ऊंची पदवी पावे।

केतु : वेद शास्त्रवेत्ता तथा ज्योतिष शास्त्र का पण्डित होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तराषाढ़ा

राहु : दूसरों का धन तथा भूमि आदि प्राप्ति करे।

केतु : कुत्ते द्वारा काटा जाने पर कष्ट पावे।

श्रावण

राहु : माता-पिता तथा सम्बन्धियों से झगड़ने वाला तथा विदेश वासी।

केतु : बहुत वाचाल शब्द शक्ति से सफलता प्राप्त करे।

घनिष्ठा

राहु : देव पूजा का इच्छुक हो।

केतु : समस्त कलाओं तथा शिल्प में अति निपुण।

शतभिषा

राहु : आत्माभिमानी तथा झगड़ालू प्रकृति वाला।

केतु : अपनी जाति शहर अथवा देश में प्रिय हो।

पूर्वाभाद्रपद

राहु : माथे अथवा मुख पर चिन्ह वाला, चेचक के दागों वाला हो।

केतु : माता के मुख पर चिन्ह हो। माता को चेचक की भी सम्भावना है।

उत्तराभाद्रपद

राहु : अपने कुटुम्ब से तंग आकर विदेश को प्रस्थान करे।

केतु : धन तथा सत्ता प्राप्त करे। राज्य की इसको प्राप्ति हो।

रेवती

राहु : सोना चांदी आदि प्राप्त करे।

केतु : झगड़ालू प्रकृति का मालिक हो।

आधुनिक संसार विज्ञान का संसार है, जिसके बिना हम प्रगति नहीं कर सकते —श्री नेहरू

Give Your advertisement in JYOTISH TIMES

The mechanical details and the advertisement tariff are as under.

Mechanical details :

Overall size = 19 Cms. × 24 Cms.
Print area = 16 Cms. × 20 Cms.

Overall size ordinary	...	Rs. 300.00
Half-Page (size vertical)	...	Rs. 200.00
Quarter page ordinary	...	Rs. 100.00
Cover Inside I	...	Rs. 350.00
Cover Inside II	...	Rs. 325.00
Last Cover	...	Rs. 400.00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्त्री का रूप और शुक्र

केवल कश्यप

प्रश्न उपस्थित होता है कि वे कौन सी परिस्थितियां हैं, जिनमें केवल शुक्र ही अपनी स्थिति से पत्नी अथवा होने वाली पत्नी के सम्बन्ध में पर्याप्त सूचना देता है। यदि आप पत्नी अथवा होने वाली पत्नी की सुन्दरता का प्रश्न ही ले लें, क्योंकि प्रायः सब से मुख्य बात जो आजकल एक स्त्री के पत्नी रूप से चुनाव में देखी जाती है वह उसकी सुन्दरता है। ज्योतिष में शुक्र की सुन्दरता उस की युग्म राशि में स्थिति से होती है क्योंकि योग्य राशियां पुरुषों का प्रतिनिधित्व करती हैं और युग्म राशियों स्त्रियों का स्पष्ट है कि एक स्त्री का स्त्री रूप से शोभा पाना उस स्त्री रूप को निखारेगा।

यदि किसी स्त्री की जन्म कुण्डली में लग्न और चन्द्रमा युग्म राशि में पड़े हो तो स्त्री रूपवती तथा साध्वी होती है और इस के विरुद्ध यदि ओज राशि में हो तो वह पुरुषों के हाव भाव वाली पापिनी होती है। यही सम्मति सारावली आदि ग्रन्थ कारों की है (देखिये सारावली .....)

शुक्र जब युग्म राशि में स्थित होगा तो स्त्री में एक नैसर्गिक आकर्षण उत्पन्न होगा जो उस को सुन्दर बनाएगा। दूसरी बात जो शुक्र को अथवा स्त्री को सुन्दर बनाती है वह उसके साथ बुध की स्थिति है। बुध कुमार अवस्था का ग्रह है। इस अवस्था में मनुष्य के मुख पर नैसर्गिक लावण्य रहता है। अतः बुध का लावण्य से घनिष्ठ संबन्ध माना गया है। बृह्यपाराशर होरा शास्त्र अध्याय ३ श्लोक २७ में बुध को "वपु जेष्ठ" अर्थात सुन्दर शरीर वाला कहा गया है। बुध का एक नाम सौम्य भी है जिसका अर्थ सुन्दर, देखने में भला है। अतः जब बुध का शुक्र से योग हो तो समझ लेना चाहिए कि शुक्र में लावण्य आ गया है। वैसे भी बुध काम गुणों में वृद्धि करना है तथा तदरूपता ग्रहण करना है। अतः जब मित्र और शुभ होकर यह शुक्र के साथ हो तो क्यों न शुक्र की सुन्दरता में चार चान्द लगाये। निष्कर्ष यह कि जिस पुरुष की जन्म कुण्डली में शुक्र और बुध इकट्ठे हों और इकट्ठे होने की राशि युग्म हो तो स्त्री अवश्य सुन्दर होगी क्योंकि ग्रह मनुष्य की सब बातों को अपने अनुरूप बनाते हैं। ऐसा ज्योतिष शास्त्र का मौलिक सिद्धान्त है। तो अब आइये उदाहरणों की ओर। नीचे एक जन्म कुण्डली-संख्या १ दी है। इस

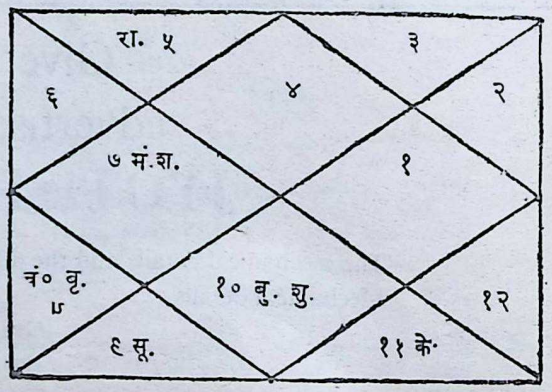

व्यक्ति की स्त्री असाधारण रूप से सुन्दर है। यहां नियम की दोनों शर्तें पूरी होती हैं। शुक्र युग्म राशि मकर में भी है और बुध के साथ भी।

श्री पं० जवाहर लाल नेहरू की पत्नी श्रीमती कमला नेहरू अपने जीवन में बहुत बीमार रहीं। उनका दीर्घ रोग से रोगी होना क्या श्री जवाहर लाल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की जन्म कुण्डली के शुक्र की स्थिति से प्रकट है। हम समझते हैं कि श्री जवाहरलाल नेहरू की जन्म कुण्डली में शुक्र और बुध एकत्रित है। जो स्त्री को काफी सुन्दर बनाते हैं। परन्तु शुक्र पर शनि की तृतीय दृष्टि और राहु की पञ्चम दृष्टि है। उस के अतिरिक्त बुध चूंकि राहु और मंगल अधिष्ठित राशियों का स्वामी है वह भी शुक्र को रोग युक्त कर रहा है। इस प्रकार रोग अनेक मीन अगों का शुक्र पर प्रभाव होने से सीधा शुक्र ही स्त्री के दीर्घ रोग रहने की ओर संकेत कर रहा है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि शुक्र पर राहु तथा शनि का प्रभाव भी होता है तो भी स्त्री बीमार नहीं होती। यह बात हम अपने अनुभव से इस प्रकार समझाते हैं कि ऐसा योग डाक्टर-स्त्री का हो तभी रोग नहीं होता नहीं तो शनिराहु का प्रभाव स्त्री को रोगी अवश्य बनाता है। डाक्टर-स्त्री में शनि राहु इस

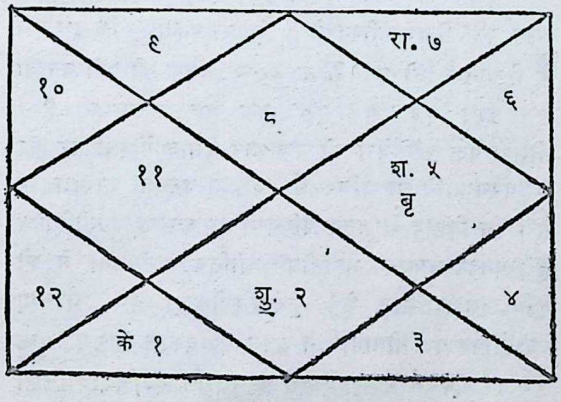

सू. बु. ३ मं.

लिए सम्भवतया अनिष्ट नहीं करने की वहां बिना शनि तथा राहु के प्रभाव से स्त्री डाक्ट हो नहीं सकती नीचे एक कुण्डली संख्या मिलिटरी के एक बड़े आफिसर की दी जा रही है जिस ने बहुत विलम्ब से विवाह किया और वह भी एक स्त्री से इस कुण्डली में शनि की दृष्टि शुक्र पर है और स्वयं शुक्र राहु अधिष्ठित राशि का स्वामी भी है। इस प्रकार दो रोगप्रद प्रभाव शुक्र पर है। चूंकि स्त्री डाक्टर है इस लिये हम समझते हैं कि शनि तथा राहु ने रोग न देकर रोग विद्या प्रदान कर दी है। रोग विद्या इस लिये कि राहु की पूर्ण नवम दृष्टि स्त्री के द्वितीय भाव अर्थात उस के विद्या भाव पर है और विद्या स्थान में विद्या स्थानाधिपति तथा विद्या कारक बुध पर राहु के अतिरिक्त सूर्य का भी प्रभाव है जिस में शनि का प्रभाव सम्मिलित है (सूर्य के शनि अधिष्टत राशि का स्वामी होने से)। अतः राहु सूर्य तथा शनि ने विद्या को अपने अनुकूल डाक्टरी लाइन का बना दिया। हम आशा करते हैं कि कारक के विचार से किसी प्रकार उस के स्वरूप का ज्ञान होता है पाठक गण इस बात को अच्छी प्रकार समझ गये होंगे। यह सिद्धान्त केवल स्त्री कारक शुक्र पर ही लागू होता है ऐसी बात नहीं। हमने तो सिद्धान्त रूप से विषय को उपस्थित कर दिया है। इस सिद्धान्त का प्रसार आप दूसरे कारकों पर भी कर सकते हैं। विस्तार भय से हम इस विषय को विस्तार पूर्वक यहां नहीं ले सकते हां इतना उदाहरण रूपमें कह सकते है कि मान लीजिएकी पुत्र कारक गुरु शनि और राहु के साथ छठ स्थान में पड़ा हुआ है तो ऐसी स्थिति में आप को यह कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि जनक का पुत्र सदा जीवन में किसी न किसी रूप में रोगी रहेगा क्योंकि शनि भी रोग और राहु भी रोग और रोग स्थान भी रोग। इन सब का पुत्र कारक गुरु को पीड़ित करना पुत्र को सदा के लिए रोगी बनने में पर्याप्त है।"

जीवन के लिए स्वतन्त्रता उतनी ही आवश्यक है, जितना कानून और शासन

—श्री अरविंद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योतिर्विज्ञान

लोक द्रष्टा

सृजन के उन आरम्भिक क्षणों से ही ज्योतिविज्ञानका प्रादुर्भाव हुआ था। ज्योतिपिण्डों का ज्ञान काल-शास्त्र है। इसी साहित्य के आधार पर भूत-भविष्य और वर्तमान का इतिहास-काल सुनिश्चित होता है। ज्योतिष-शास्त्र के विचार में द्वादश राशियों का एक ३६०° का वृत है। साधारणतः ६ स्वस्थ श्वासा की एक विनाड़ी और ६० विनाड़ी की १ कला, आगे ६० कला का १ अंश और ३० अंश की १ राशि तथा १२ राशियों का १ परिभ्रमण वृत्त यही इस शास्त्र की भूमिका है।

पृथ्वी के गोल पर मध्यवृत खींचकर उसी के समकक्ष आकाश में भी विषुव-वृत परिणित किया गया है। रति-नारायण इस मध्यवृत्त के किसी एक स्थान से अण्डाकार वृत्त बनाते हैं। यह वृत्त रवि के नित्योदय पर १ वर्ष में परिपूर्ण होता है। इसको ज्योतिषीय भाषा में "क्रांतिवृत्त" कहा जाता है इस क्रांतिवृत्त के सहारे ही चन्द्रादि अन्यान्य गृहपिण्डों को गणित प्रक्रिया द्वारा चक्र के भुक्त भोग्य में समझा जाता है। इसी वृत्त के माध्यम पर इसी के प्रायः समकक्ष भारतीय ज्योतिषशास्त्रों का एक नक्षत्रवृत्त भी है। जिसके २७ समविभाग किये गये हैं। इनका नामकरण भी किया हुआ है। जैसे किसी भी छोटे या बड़े वृत्त को ३६०° में और द्वादश राशिखण्डों में बोलना परिभाषा है किन्तु नक्षत्रवृत्त की द्वादश राशियां भारतीयों को दृश्य पद हैं। प्रतिएक राशिखण्ड में $2\frac{1}{4}$ नक्षत्र आते हैं। यों २७ नक्षत्रों का वृत्त मेषादि आकृति विशेषों के साथ द्वादश राशियों में समाधान है।

भारतीय कालगणना में नक्षत्रवृतिय राशी चक्र का महत्व है। किन्तु यह परावलंबी है। वेध प्रक्रिया विषुववृत्त पर सुनिहित है। साथ ही क्रांतिवृत्त दोनों अन्य वृत्तों को समान रूप में व्यवहृत है। क्रांतिवृत्त आकाश में रवि का मार्ग है जो भूर्-भुनर्-स्वर् तीनों लोकों में मध्यवृत्ताकार है। यह भूलोक को अडांकृति में विषुव वृत्त को मध्यवृत्त मान लेने पर दृश्य है। यह विषुव रेखा से दक्षिणोत्तर २४° की परम दूरी पर परि-लक्षित होता है।

मतमतान्तर :—

पुराचार्य (भारतीय सिद्धांत ग्रंथ) क्रांति का परम मान २४° स्थिर स्वीकारते हैं। दूसरा कहता है कि इस वृत्त में हिलान है जो २४° से बढ़कर २७° तक की दूरी बनाता है। इसी २४° से २७° तक यह घटता भी है। तीसरा पक्ष क्रांतिवृत्त को चक्राकार घुमाव में स्वीकार कर ०° परमक्रांति या अधिक में ४०° की परमता का पक्षकार है। इस विवाद के जनक पश्चिमी (पाश्चात्य) ज्योतिर्विद हैं। इनका समर्थन भारतीय ज्योतिष मनीषियों ने भी (विशेषतः वर्तमान के) करना स्वीकारा है। भारतीय ज्योतिर्विद पं० दीनानाथ ने अपने "वेदकाल निर्णय" पृष्ठ १० पर शकवर्ष २८२०० पूर्व परमक्रांति २७/२५.३ लिखा है। इसी पृष्ठ के अंतिम कोष्टक में शकाब्द १८०० में २३°/२७.३° बतलाकर क्रांति में प्रतिवर्ष—०.४७६ विकला (ऋणगति) स्वीकारी है। जो कुछ भी हो; क्रांतिवृत्त विषुव वृत से २४ के आसन्न अवश्य है। इसे विद्यार्थियों की भाषा में सूर्य कक्षा से पृथ्वी का झुकाव माना जाता है। पूर्व-पश्चिम या उत्तर-दक्षिण की ओर इष्ट पिंड की स्थिति समझी जाती है।

इस प्रसंग में उज्जैन वेधशाला के वर्तमान अधीक्षक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पं० कमलाकांत जोशीजी ने हमें लिखा था कि—"प्राचीन ग्रंथों में रवि की परमक्रांति २४ लिखी है, उस समय उज्जैन के अक्षांश भी २४ ही माने जाने थे, इस समय उज्जैन का अक्षांश २३°/११' है और परमक्रांति २३/२७ है।"

यह एक अलौकिक युक्ति सामने आती है लेकिन इससे क्रांति का समाधान सम्भव नहीं है। क्योंकि उज्जैन के माध्यम पर अक्षांश सम परम क्रांति स्वीकार करना, यह भारत के हित में युक्तिसंगत हो सकती है, किन्तु क्रांति की सार्वभौमता संदेह में पड़ जाती है, अतः क्रांति का समाधान एक विचारणीय विषय बना हुआ है।

नक्षत्रवृत्तः—

वास्तव में यह एक ऐसी आकृति विशेष है जिसे चक्राकार कहा जा सकता है। वसन्तसम्पात बिन्दु से अश्विनी का दृश्य योगतारा ८° पर है। आगे भरणी का २०° पर और कृत्तिका का ३७/३० पर सूर्य सिद्धांतोक्त है। यों पूरा चक्र योग ताराओं का सुनिश्चित दृश्य और अचल है, ऐसा माना भी गया है। जैसे खेती का दृश्यतारा ३५७°/५०° पर व्यवस्थित है और खेती की सीमा ३६०° है। अर्थात् खेती के अन्त से अश्विनी की १३°/२०° सीमा के मध्य ८° पर अश्विनी का योगतारा है। यह समझाया गया है। यह व्यवस्था किसी एक ऐसे काल की है, जहां वसन्तसंपात और अश्विनी का आरम्भ भाग एक ही स्थल विशेष था। किन्तु काल की गति से अश्विनी का आरम्भ स्थान विषुव सम्पात बिन्दु से वर्तमान में २३°/२७° पश्चिम में सरका है। अर्थात् दृश्य नक्षत्र वृत पूरा ही २३°/२७° के परमान्तर पर दिखाई दे रहा है। इसे ही अयन भेद या अयनांशा कहा जाता है।

अयन की वर्तमान में प्रतिवर्ष। धनात्मक गति ५०.२ है। इससे पूर्व यह गति ६० गणेश दैवज्ञ ने स्वीकार की थी। जो भी हो, भारतीय पद्धति पर साधे गये ग्रहादि मान में अयनांशा युक्त करने पर वे संपातीय या विषुव वृत्तीय होते हैं। इस प्रकार नक्षत्र वृत्त की व्यवस्था के कारण ज्योतिविज्ञान में निरयण और सायन, इन दो गणनाओं का व्यवहार प्रयोग में लाया जा रहा है। भारतीय ज्योतिषी अश्विनी आदि नक्षत्रों का और इस पर बने राशिवृत्त का ज्योतिष शास्त्र में विचार करता है और पाश्चात्य ज्योतिषी विषुववृत्तीय सायन गणना पर भूत भविष्य और वर्तमान को आंकना चाहता है। दोनों की दिशाएं यहां लोक-व्यवहार में विषमवाद रखती हैं। फलश्रुति दीनों की भिन्न है। एक वाक्यता में उपाय शेष नहीं रहे हैं, और सम्भव भी नहीं है। जबकि गणित विज्ञान में दोनों एकाएक भी हैं।

अयनांशावादः

यह विवाद केवल भारतीय धरती पर नियन्त्रण गणनावादियों को है। इतिहास का "सूर्यसिद्धांत" नामक ग्रंथ धरोहर में है। अन्यान्य बहुतेरे सिद्धांतकार भी समय-समय पर हुये हैं, किन्तु यह सौर पक्ष अकाट्य प्रमाण में सुरक्षित है। वेधोपलब्धि में युग-सम्बन्धि ध्रुवगणना यद्यपि सूर्यसिद्धांत की भी वर्तमान में ज्यों की त्यों उपयुक्त नहीं है, इस पर भी इस शास्त्र का स्पष्ट सूर्य यथार्थ स्वीकारा जाता है। सूर्य में भी बहुत सूक्ष्मान्तर अर्वाचीन विद्वान देते हैं। यह उनकी हठधर्मी पाश्चात्यशोध पर परिष्कृत मानी जाती है। सूर्य सिद्धांत में इसी प्रकार अन्यान्य में भी छायार्क सिद्ध करने की प्रक्रिया विशेष है, जिसके द्वारा नित्य का माध्यान्हिक वैषुवीय स्पष्ट रवि का और छायार्क का अन्तर अयनांशा है। वस्तुतः विषुव दिन के मध्यान्ह में क्रांति का अभाव रहता है। अतएव प्रति अक्षवृत्त पर निज मध्यान्ह में स्पष्ट वैषुवीय रवि भोग ० अर्थात् मेषारम्भ में होगा। इस मध्यान्ह के छायार्क से करणागत रवि का अन्तर अयनांशा —अयनविक्षेप है। यह वर्तमान में निरयण को धनात्मक है और कालान्तर से ऋणात्मक भी देखा जाता है। यह यह सर्वोत्तम युक्ति है। दूसरा पक्ष ४३,२०,००० वर्षों में ६०० भगण पर भुजा के ×३/१० मान से सम्प्राप्त होता है। यह सहायक साधन है। यह छायार्क की आसन्नता का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतीक है। इसे भारतीय ज्योतिष शास्त्री विवाद में खड़ा कर बैठे हैं। इसकी परमता $\frac{५० \times ३}{१०} = २७$ है।

इसकी वार्षिक गति ५४" पल है। इस पर भी विवाद है। तीसरा पक्ष अयनबिन्दु को चक्राकार मानकर आयनांश स्वीकार करता है। उसके पक्ष में अयन-गति ५०/२" हैं, जो कालान्तर से घटती है और बढ़ती भी है। यह अर्वाचीन विद्वानों की समझ का परिणाम है। इसकी जड़ में गणेप दैवज्ञ का अयन परिभ्रमण कारण है। गणेश-देवज्ञ ने अयन में गति कही है। किन्तु छायार्क को महत्व नहीं दिखाया है। इस प्रकार भारत में अयनांशावाद का भी वितंडावाद बन बैठा है।

होराशास्त्र :—

अहोरात्र शब्द से "होरा" शब्द की व्याख्या की हुई है। इस संकलन में दिन-रात्रि की २४ होरा और उसमें रवि आदि ७ ग्रहों की कक्षाभेद के सहारे वारगणना का क्रम निश्चित हुआ है। होरा ज्योतिष शास्त्र में वार, तिथि, नक्षत्र, योग, करण, और ७ या ८ ग्रह हैं। नाक्षत्रीय राशियों पर भारतीय ज्योतिष की भूमिका परंपरागत है। वारों के ग्रह देवता है, तिथियों और नक्षत्रों के भी देवता स्वीकार किये गये हैं। इसी प्रकार राशियों की प्रकृति तथा उनकी संज्ञाएं तय करते हुए सात ग्रहों को १२ राशियों के स्वामी स्वीकारा गया है। ग्रह राशिचक्र में परिभ्रमण करता है, चक्र में उसकी अपनी राशि है, अपना स्वयं का घर है। इसी प्रकार ग्रहों के उच्च स्थान और उनकी मूल त्रिकोण राशियां मानकर परस्पर में मित्र-समशत्रु रूप भी प्रकट किये गए हैं। ग्रह किसी एक राशि में स्थित होकर दूसरी राशि पर दृष्टि सम्बन्ध बनाता है, वहाँ स्थित अन्य दूसरा ग्रह भी उसका सम्बन्धी बनता है। सम्बन्ध लोकाचार के अनुसार शुभ और अशुभ प्रक्रियाओं के जनक होती है, यह होराशास्त्र का एक संज्ञा-तन्त्र है। भारतीय ज्योतिषशास्त्र का होराविभाग अपने आप में सम्पूर्ण है भावी युद्धादी निर्णय पर कूर्मचक्र नक्षत्र व्यवस्था पर ग्रह सम्बन्धों द्वारा प्राकृतिक ऋतु, और उनके शुभ-शुभ फल संक्रमणों द्वारा एवं जातकीय फलाफल भावचक्र पर ग्रहों की स्थिति-युति-दृष्टि द्वारा अभीष्ट साधन करता आ रहा है पुराचार्यों ने कुछ परम्परागत और कुछेक अपने स्वतन्त्र अनुभव पर योगायोग बांधे हैं। इन्हें आप्तवाक्य मानकर तात्कालिक ज्योतिषी लोकरंजन कर रहा है। होराशास्त्र में अनेकों महर्षि ऋषि-आचार्य हुए हैं, विभिन्न प्रणालियों ने यहां जन्म लिया है, होराशास्त्र का प्रथम गोचर प्रकरण है। आगे चलकर जातक प्रकरण खुला है। जातक में पराशरीय और जैमिनीय नाम से परिचित दो अन्य पार्टियां सामने आई हैं। इसी प्रकार कालांतर से ताजिक हिल्लाज मत का परिस्फुरण हुआ है। इसी माध्यम पर पाश्चात्य ज्योतिर्विद भी अंशात्मक युतिभेद से फलाफल को प्रकट कर रहे हैं। गणितखंड में तो निरयण और सायन नामक मात्र दो ही शाखा प्रक्रियाएँ हैं जिनका परिणाम एक है। किन्तु ज्योतिर्विज्ञान का यह अपर होरा-खण्ड वर्तमान में स्वयं षडाँग बन बैठा है। इनकी पारस्परिक एकता "ख" पुष्पवत् है। परस्पर में एक से दूसरे का पथ भिन्न है अतएव फलाफल और उनकी काल मर्यादाएं विभिन्न हैं। सच कहा जाये तो फल ज्योतिष जगत अमर्यादित भानुमति का पिटारा बन बैठा है। इस पर संविधान की लगाम और अनुसंधान कार्य की परम आवश्यकता है। शास्त्र की प्रशंसा अन्यान्य सभी शास्त्र मुक्त कंठ से करते हैं। ज्योतिर्विज्ञान के बिना वेद-पुराण उपनिषद और नवीन प्राचिन सभी प्रकार के किसी भी विज्ञान के शोध असम्भव है। इस शास्त्र का अस्तित्व निःसंदेह है किन्तु इस साहित्य का उपयोगी लाभ काकतालीय न्याय पर आ टिका है। इस साहित्य में आचार्य मत सुरक्षित है जिनके सहारे लोक और वाहक ज्योतिषी का कार्य जिस किसी स्थिति में चल रहा है। किसी भी विषय के भविष्य परिणाम की अभिलाषा अप्रतिसप्त है, इसी लिए ज्योतिष विद्या सदा-सर्वदा उपयोगी विषय है। शास्त्र की सम्पन्नता पर संदेह नहीं है। किन्तु।

"शास्त्रमाद्यं तदेवेदंयत्पूर्व प्राह भास्करः
"युगानां परिवर्तेन काल भेदोत्र केवलः

वैसे तो भारतीय शास्त्रों को हर्षल-नेपच्यून-प्लुटों का भी नया रोग है। समाधान अति आवश्यक है। ◆

ज्योतिष टाइम्स

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लक्ष्मणगढ़ में ज्योतिष महासम्मेलन

(हमारे विशेष संवाददाता द्वारा)

- वेद का निर्मल नेत्र विषम परिस्थितियों में।
- विकास और अध्ययन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रयत्न की आवश्यकता।
- सम्मेलन के अध्यक्ष डा० गोस्वामी जी की गंभीर चेतावनी।
- गणित के लिए मार्गदर्शक निर्णय।
- फलित के महत्वपूर्ण अनुभव सिद्ध योग।

शेखावाटी के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर लक्ष्मणगढ़ के ऋषिकुल विद्यापीठ के प्रांगण में ९-१० फरवरी को ज्योतिष महासम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता देश के प्रसिद्ध संस्कृत और ज्योतिष के विद्वान डा० गोस्वामी गिरिधारीलाल नई दिल्ली ने किया और जिसका उद्घाटन डा० आचार्य गौरीशंकर गंगानगर ने किया।

भूत भविष्य और वर्तमान का दर्पण

प्रारम्भ में सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष और ऋषिकुल विद्यापीठ के निदेशक विद्यावाचस्पति आचार्य नंदकुमार शास्त्री ने आगत महानुभावों का स्वागत करते हुए कहा कि ज्योतिष मानव के भूत, वर्तमान और भविष्य की सम्पूर्ण कहानी है। यह भूत का परिचय देते हुए, वर्तमान को समझाकर भविष्य के सम्भावना सूत्रों का सटीक भाष्य करता है। यह हमारे जीवन निर्माण के लिए मार्ग-दर्शक ही नहीं अपितु कर्म के प्रति प्रेरक भी है इसीलिए ज्योतिष को वेद का निर्मल चक्षु माना गया है। यह भी एक तथ्य है कि पांडित्य के विस्तार समुचित साधनों की कमी और विधिवत् अध्ययन-अध्यापन की अव्यवस्था ने इस शक्ति को विषम स्थितियों में डाल दिया है। इस विज्ञान के विकास, अध्ययन एवं प्रचार-प्रसार के लिए कोई राष्ट्रीय स्वरूप निर्धारित कर विश्व को पुनः इस क्षेत्र में मार्ग दर्शन देने की आवश्यकता है।

सुखी जीवन की कुंजी

तदनन्तर उप स्वागताध्यक्ष श्री महावीर प्रसाद झुन-झुनु वाला ने बताया कि हमारे दादे-परदादे सदा से ही ज्योतिष विद्या के सहारे धार्मिक, सामाजिक तथा पारिवारिक काम शुभ वेला में करके अपने जीवन को सुखी बना पाये थे। हम ज्योतिषियों के ऋणी हैं और उनका बड़ा आदर करते हैं।

मान्य अतिथि

स्वागतमंत्री ज्योतिषाचार्य पं० रामचन्द्र जोशी ने अपने वक्तव्य में ज्योतिष और सम्मेलन की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए मान्य अतिथियों का परिचय दिया और नवयुवकों को प्रोत्साहित किया कि इस शाश्वत ज्ञान के प्रचार-प्रसार का कार्य वह अपने हाथ में ले लें। आपने कहा कि आचार्य गौरीशंकर जी हस्तरेखा विज्ञान में अच्छी गति रखते हैं। आप जीव, आत्मा, देवता, परमात्मा के लिए अनुसंधानिक विवेचन करने में सिद्धहस्त हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

डा० गोस्वामी की प्रशंसा करते हुए आपने कहा कि डा० गोस्वामी फलित ज्योतिष के साधिकार मनीषी हैं। दिल्ली से 'ज्योतिष टाइम्स' नामक श्रेष्ठ मासिक पत्र का जो कि हिन्दी में है, संपादन कर रहे हैं। पराशर होरा शास्त्र का तात्विक विवेचन पूर्ण शोध प्रबन्ध, जो संस्कृत में है, आपकी अमूल्य देन हैं। आप पश्चिमी विद्वान ल्यू और भारतीय गणितज्ञ, एन. सी. लहरी के विशेष प्रशंसक हैं जिनकी गणित की पुस्तक आज ज्योतिषियों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध हो रही है।

माल्यार्पण

तत्पश्चात् सम्मेलन के अध्यक्ष डा० गोस्वामी और उद्घाटनकर्ता आचार्य गौरीशंकर को पुष्प मालाएं भेंट की गई। माल्यार्षण करने वालों में स्वागताध्यक्ष, उपस्वागताध्यक्ष और स्वागत मंत्री के अतिरिक्त श्री रामकृष्ण शर्मा प्र० अ० श्री रघुनाथ उ० मा० विद्यालय, श्री मदनलाल जाजोनिया, श्री शंकरलाल कावटा, श्रीमती सुशीला गुप्ता, प्र० अ० श्री रघुनाथ बालिका विद्यालय, श्रीमती दिनेश शर्मा प्र० अ० सावित्री कन्या पाठशाला, श्री सीताराम जी नारनोलिया और माननीय पं० महावीर प्रसाद जी ढंढ के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

व्यक्ति की महत्ता

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए आचार्य गौरीशंकर ने अपने अभिभाषण में ज्योतिष की महत्ता स्पष्ट की और कहा कि व्यक्ति चाहे तो देवता और परमात्मा के साक्षात्कार अपनी कुंडली भी बदलवा सकता है। शेखावाटी के नागरिकों को आपने प्रेरणा दी कि वे इस अंचल में संस्कृत विश्व विद्यालय की स्थापना करें जिसमें ज्योतिष को प्रमुख स्थान दिया जाए।

अंधविश्वास का स्वरूप

सम्मेलन के अध्यक्ष डा० गोस्वामी ने अपने अभिभाषण में महर्षि पराशर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और समागत विद्वानों की सराहना की। ज्योतिष विज्ञान पर आस्था के प्रसंग में आपने बताया कि जो भद्रजन मंच पर आकर ज्योतिष को अन्धविश्वास कहते हैं, वही घर में ज्योतिषियों के चरण छूते हैं तथा उनसे मुहूर्त लेकर मंच पर भाषण करने तक जाते हैं। वस्तुतः ज्योतिष विशुद्ध विज्ञान है उसकी उपेक्षा करने वाले स्वयं घाटे में रहेंगे।

डा० गोस्वामी जी ने आगे कहा कि जन्म कुण्डली के द्वादश भावों के अलग-अलग विशेषज्ञ होने चाहिये ज्योतिषियों को चाहिये कि वह अपना अनुभव ठोस बनायें और नये-नये सिद्धांत से परिचय प्राप्त करें। सम्मेलन के संयोजकों को धन्यवाद देते हुए आपने आशा प्रकट की कि इस विज्ञान की अच्छी समृद्धि होगी और ज्योतिषियों के लिए यह सम्मेलन परमोपयोगी सिद्ध होगा।

आज के अर्थप्रधान युग की चर्चा करते हुए डा० गोस्वामी ने कहा कि जनता से ज्योतिषियों को अच्छा आर्थिक सहयोग मिलना चाहिये। ज्योतिषी इस युग में यदि अभावग्रस्त रहा तो नवीन अनुसंधान तो दूर रहा, आने वाली पीढ़ी को वह इससे अलग रखने का प्रयत्न करेगा। अमरीका में ज्योतिष के प्रचार का उदाहरण देकर आपने बताया कि वहाँ ज्योतिषियों को भारी-भारी रकमें भेंट की जाती हैं।

डा० गोस्वामी पौन घंटे तक धारा प्रवाह बोले। प्रबुद्ध श्रोता मुग्ध हो गए, सबने आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

अधिवेशन का दूसरा दिन

दूसरे दिन के खुले अधिवेशन में डा० गोस्वामी का ऋषिकुल विद्यापीठ की ओर से अभिनन्दन हुआ और घोषणा की गई कि विद्यापीठ में ज्योतिष और कर्मकाण्ड की विशेष कक्षाओं का प्रबन्ध किया जाएगा। भारतीय ज्योतिष परिषद की प्रादेशिक शाखा गठित करने के लिए एक तदर्थ समिति भी नियुक्त की गई। इस महत्वपूर्ण सम्मेलन का आयोजन ज्योतिष अनुसंधान संस्थान समिति लक्ष्मणगढ़ (सीकर) के तत्वावधाव में हुआ था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गणित के निर्णय

सम्मेलन के सन्दर्भ में १० फरवरी को प्राचार्य श्री श्यामनन्दन मिश्र ज्योतिषाचार्य कोटा की अध्यक्षता में गणित और फलित के सम्बन्ध में दो संगोष्ठियां हुईं जिनमें सभी समागत सज्जनों ने भाग लिया।

गणित गोष्ठी ने निर्णय किया कि—

(१) सूर्य स्पष्ट की गणित केतकी गणित के हिसाब से शुद्ध तथा फल कहने में पूर्ण सहायक है।

(२) अयनांश के लिए चित्रापक्षीय अयनांश ही फलित के लिए परमोपयोगी है।

(३) विंशोत्तरी दशा के अन्तर-प्रत्यन्तर ही फल कथन के लिए श्रेष्ठ हैं।

फलित के अनुभव सिद्ध योग

फलित गोष्ठी में शुभ-अशुभ का निर्णय करने में लघु पाराशरी विशेष सहायक मानी गई। दैवज्ञों ने अपने-अपने अनुभव में आये योग भी सुनाये जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं।

पं० रामचन्द्र जोशी:—

(१) जब दोनों मारक स्थानों का स्वामी एक ही ग्रह हो जाता है तब वह मारक फल न करके कारक फल करता है जैसे मेश लग्न में शुक्र तथा तुला लग्न में मंगल।

(२) तीसरे स्थान शुक्र रहने से जातक के बाद बहिन का जन्म हो।

( ) शनि और गुरु सिंह राशि में हो तो जातक के केवल एक ही संतान होती है।

(४) राहु की नवम पंचम दृष्टि योगकारी ग्रहो का प्रभाव नष्ट कर देती है।

(५) चौथे स्थान पर बुध विकल रहता है।

डा० गोस्वामी गिरिधारी लाल :—

(१) लग्न में बुध की राशि का मंगल वक्ता बनाये।

(२) नीच राशि का बृहस्पति केन्द्र कोण में रहने पर शुभ फल देता है।

(३) कर्क लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में चतुर्थ स्थान का मंगल अशुभ देखा गया है।

(४) ६,८,१२ घर के स्वामी आपस में स्थान परिवर्तन कर राज योग देते हैं।

पं० कल्याणदत्त शर्मा :—

(१) पंचमेश यदि अष्टमेश के साथ अष्टम में रहे तो जातक सट्टा करे परन्तु प्राप्ति नहीं हो।

(२) द्वितीय स्थान का मंगल दाम्पत्य जीवन में कष्टकारी है।

(३) शनि गुरु का योग जातक को अल्प प्रद बनाता है।

(४) लग्नेश सप्तम में चला जाये तो जातक पत्नी की सेवा करे।

पं० रामपाल शर्मा :—

(१) गुरु दूसरे स्थान रहकर कुटुम्ब सुख कम करता है।

(२) राहु सद्य फल देने वाला ग्रह है। ग्यारहवें घर लाभ करता है।

(३) नीच राशि का मंगल चतुर्थ स्थान में माता के सुख में कमी करता है।

(४) कन्या की कुंडली में सूर्य भाग्येश हो तो अस्त हुआ मंगल मंगली योग नहीं करता है।

पं० शिवचरण शास्त्री :—

(१) लग्नेश या दशमेश मंगल दशम में हो तो जातक सर्जन या सेना का अफसर होता है।

(२) उच्च का गुरु लग्न में रहने से जातक विद्वान होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) वर्ष लग्न में लग्नेश और कार्येश का इत्यशाल योग कार्य सिद्ध कराता है।

पं० श्यामनन्दन मिश्रः—

(१) सप्तम स्थान में मंगल, शनि या राहु रहने पर पत्नी को प्रदर बीमारी देता है।

(२) शुक्र मंगल की युति कहीं भी रहने से दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता।

(३) दशम स्थान का शनि राज योग करता है।

(४) शनि का राशि पंचम में रहने से एक पुत्र अवश्य होता है।

पं० देवकीनन्दन खेड़वाल :—

(१) शुक्र मंगल के साथ तृतीय स्थान पर सम्बन्ध करे तो व्यक्ति सेना में रहता है।

(२) सूर्य चन्द्रमा साथ रहने पर चन्द्रमा विफल हो जाता है।

(३) सूर्य जिस स्थान पर बैठता है उसी से अलग करता है।

(४) शुक्र लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति अपने समाज में विशिष्ट होते देखे गये हैं।

पं० सत्यनारायण नागवाल :—

(१) पंचम स्थान पर राहु और शनि रहकर सन्तान नष्ट करे या होने ही नहीं दे।

(२) अष्टम में मंगल बवासीर (पाइल्स) का रोग करता है।

पं० घीसाराम चोमाल :—

(१) लग्न, पंचम और नवम बलवान रहने से जातक विश्व-विख्यात होता है।

(२) शनि अष्टम में रहने से दीर्घायु होता है।

गिरिधारी लाल गंगावत :—

(१) उच्च का गुरु लग्न में हो तो जातक १६ साल तक बीमार रहता है।

(२) शनि उच्च का होकर पति भवन को देखे तो वह विधवा हो या तलाक मिले।

उपस्थित महानुभाव

सम्मेलन में निम्नासार बल दैवज्ञ उपस्थित थे।

१. पं० श्री देवकीनन्दन खेड़वाल
पो० फतेहपुर शेखावाटी (राज०)

२. श्री घासीराम जी चोमाल
पो० चिराणा (जयपुर)

३. श्री दयाराम जी जोशी पो० लोसल (सीकर)

४. श्री गिरधारी लाल गंगावत
पो० रामगढ़ शेखवाटी (राज०)

५. श्री श्याम सुन्दर जी सुरोलिया
पो० मुकन्दगढ़ (झुंझनू)

६. श्री परमेश्वरजी 'द्विरेफ' पो० चिड़ावा (राज०)

७. श्री राधा मोहन शर्मा पो० राणोली (सीकर)

८. श्री वैणी प्रसादजी जोशी पो० चिड़ावा (राज०)

९. श्री उमानीराम शर्मा पो० सुजान गढ़ (चूरू)

१०. श्री बालकृष्ण इन्दोरिया किले के पीछे
चूरू (राज०)

११. आचार्य उमेश शास्त्री
प्राचार्य चमड़िया संस्कृत कालेज फतेहपुर शेखावाटी

१२. श्री सत्यनारायण नागवान
पो० फतेहपुर शेखावाटी

१३. श्री सीतारामजी गंगावत पो० रामगढ़ शेखावाटी

१४. श्री सीताराम स्वामी एम० ए० बागला हा० सें० स्कूल पो० चूरू (राज०)

१५. वैद्य श्रीसतीशचन्द्र शर्मा पो० फतेहपुर शेखवाटी

१६. प्रो० रामपाल शर्मा
महाराजा संस्कृत कालेज-जयपुर

१७. पं० कल्याण दत्त जी शर्मा
सुपरवाइजर ज्योतिष मंत्रालय—जयपुर

१७. प्राचार्य श्याम नन्दन मिश्र
श्री विट्ठलनाथ संस्कृत महाविद्यालय कोटा (राज०)

१८. पं० शिवचरण शास्त्री ज्यो० आ०
पो० सैंथल वाया दौसी (जयपुर)

२०. पं० रामनिरंजनजी जोशी पो० झुंझनु (राज०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री शंकर व्यापार भविष्य

ता० २४ मार्च से २१ अप्रैल सन् १९७४ ई० तक चांस वस्तु मात्र व्यापार वायदा एवं हाज़िर व्यापार।

पं० शिवचरणलाल शर्मा रमलाचार्य
हनुमान गंज फिरोजखाद, जि० आगरा

चाँस चांदी पुराना सिक्का आदि—आई तेजी बेचान करडो बहुत लम्बी लाइन मन्दी की बन जाती है सम्भव है १५० रुपये, २०० रुपये के अथवा कम अधिक मन्दी बन जाये।

चांस गुड़ खांड चीनी—ता० २४ मार्च से ८ अप्रैल तक मन्दी ता० ९ अप्रैल से खरीदो २१ तक अच्छी तेजी बनेगी।

चाँस रुई कपास—ता० २४ मार्च से बेचो १५ दिन में रुई पर १२५ रुपये, १५० रुपये या अधिक मन्दी बन सकती है।

चांस पाट जूट वारडाना—ता० २४ मार्च से ३१ तक मन्दी ता० ३१ मार्च से १५ तक तेजी १५ अ० से बेचान कर दो ता० २१ अप्रैल तक मन्दी खेलने वाले माल कमायेंगे।

चांस धान्यादि दालवाना—ता० २४ मार्च से प्रत्येक धान्यादि दालवाना का स्टाक निकाल दो यहां से गेहूं में २५ रु०, ३० रु० चना में १५ रु० २५ रु० ४० रु० तक मटर, जौ में १२), १५), २०) रु० बाजरा जुवारी, मक्की में १५) २०) तक तूअर (अरहर) में २०), ३०) रु० मोठ, मसूड़ में १०) १५) रु० की मन्दी बन जाना सम्भव है।

चांस किराणा—हल्दी, धनियां, जीरा, अजमाइन मैंथी लाल मिर्च, सोंफ, नमक, सांभर, काली मिर्च, साबूदाना आई मन्दी यथा शक्ति खरीदो भविष्य में जनरल रुख तेजी का रहेगा। अमचूर इमली में अच्छी मन्दी बनेगी।

चांस खुश्क मेवा—काजू, पिस्ता, चिलगोजा, चिरौजी अखरोट, आलू वखारा में पूरा महीना अच्छी मन्दी बनेगी किसमिस, छुआरा, मखाना, खुश्क गोला में पूरा महीना रुख तेजी का रहेगा।

चाँस देशी घी—ता० २४ मार्च से ३१ मार्च तक मन्दी में खरीदो २१ अप्रैल तक २०) ३०) रु० की तेजी बनेगी।

चांस तिलहन तेल वीयो—ता० २४ मार्च से आई तेजी बेचो अथवा ८ दिन के मन्दे लगादो अलसी, अरन्डा में १०), १५) रुपये, तेल मूंगफली, सरसों, सरफी में ८) १०) १५) रु० तक करड़ी व तिल्ली में १५) २०) रु० तक भविष्य में मन्दी बन जाना सम्भव है। उपरोक्त आंकड़ों से कम अधिक भी लाइन चल सकती है।

चांस तम्बाकू वनसदा आदि—जनरल रुख तेजी का रहेगा। ता० १५ अप्रैल से मन्दी बनेगी भविष्य में अच्छी मन्दी आयेगी।

धर्म की स्थापना युक्तिसंगत जीवन पद्धति के रूप में होनी चाहिए—राधाकृष्णन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) वर्ष लग्न में लग्नेश और कार्येश का इत्यशाल योग कार्य सिद्ध कराता है।

पं० श्यामनन्दन मिश्रः—

(१) सप्तम स्थान में मंगल, शनि या राहु रहने पर पत्नी को प्रदर बीमारी देता है।

(२) शुक्र मंगल की युति कहीं भी रहने से दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता।

(३) दशम स्थान का शनि राज योग करता है।

(४) शनि का राशि पंचम में रहने से एक पुत्र अवश्य होता है।

पं० देवकीनन्दन खेड़वाल :—

(१) शुक्र मंगल के साथ तृतीय स्थान पर सम्बन्ध करे तो व्यक्ति सेना में रहता है।

(२) सूर्य चन्द्रमा साथ रहने पर चन्द्रमा विफल हो जाता है।

(३) सूर्य जिस स्थान पर बैठता है उसी से अलग करता है।

(४) शुक्र लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति अपने समाज में विशिष्ट होते देखे गये हैं।

पं० सत्यनारायण नागवाल :—

(१) पंचम स्थान पर राहु और शनि रहकर सन्तान नष्ट करे या होने ही नहीं दे।

(२) अष्टम में मंगल बवासीर (पाइल्स) का रोग करता है।

पं० घीसाराम चोमाल :—

(१) लग्न, पंचम और नवम बलवान रहने से जातक विश्व-विख्यात होता है।

(२) शनि अष्टम में रहने से दीर्घायु होता है।

गिरिधारी लाल गंगावत :—

(१) उच्च का गुरु लग्न में हो तो जातक १६ साल तक बीमार रहता है।

(२) शनि उच्च का होकर पति भवन को देखे तो वह विधवा हो या तलाक मिले।

उपस्थित महानुभाव

सम्मेलन में निम्नासार वल दैवज्ञ उपस्थित थे।

१. पं० श्री देवकीनन्दन खेड़वाल
पो० फतेहपुर शेखावाटी (राज०)

२. श्री घासीराम जी चोमाल
पो० चिराणा (जयपुर)

३. श्री दयाराम जी जोशी पो० लोसल (सीकर)

४. श्री गिरधारी लाल गंगावत
पो० रामगढ़ शेखवाटी (राज०)

५. श्री श्याम सुन्दर जी सुरोलिया
पो० मुकन्दगढ़ (झुंझनू)

६. श्री परमेश्वरजी 'द्विरेफ' पो० चिड़ावा (राज०)

७. श्री राधा मोहन शर्मा पो० राणोली (सीकर)

८. श्री वैणी प्रसादजी जोशी पो० चिड़ावा(राज०)

९. श्री उमानीराम शर्मा पो० सुजान गढ़ (चूरू)

१०. श्री बालकृष्ण इन्दोरिया किले के पीछे
चूरू (राज०)

११. आचार्य उमेश शास्त्री
प्राचार्य चमड़िया संस्कृत कालेज फतेहपुर शेखावाटी

१२. श्री सत्यनारायण नागवान
पो० फतेहपुर शेखावाटी

१३. श्री सीतारामजी गंगावत पो० रामगढ़ शेखावाटी

१४. श्री सीताराम स्वामी एम० ए० बागला हा० सें० स्कूल पो० चूरू (राज०)

१५. वैद्य श्रीसतीशचन्द्र शर्मा पो० फतेहपुर शेखवाटी

१६. प्रो० रामपाल शर्मा
महाराजा संस्कृत कालेज-जयपुर

१७. पं० कल्याण दत्त जी शर्मा
सुपरवाइजर ज्योतिष मंत्रालय—जयपुर

१७. प्राचार्य श्याम नन्दन मिश्र
श्री विट्ठलनाथ संस्कृत महाविद्यालय कोटा (राज०)

१८. पं० शिवचरण शास्त्री ज्यो० आ०
पो० सैंथल वाया दौसी (जयपुर)

२०. पं० रामनिरंजनजी जोशी पो० झुंझनु(राज०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री शंकर व्यापार भविष्य

ता० २४ मार्च से २१ अप्रैल सन् १९७४ ई० तक चांस वस्तु मात्र व्यापार वायदा एवं हाज़िर व्यापार।

पं० शिवचरणलाल शर्मा रमलाचार्य
हनुमान गंज फिरोजखाद, जि० आगरा

चाँस चांदी पुराना सिक्का आदि—आई तेजी बेचान करडो बहुत लम्बी लाइन मन्दी की बन जाती है सम्भव है १५० रुपये, २०० रुपये के अथवा कम अधिक मन्दी बन जाये।

चांस गुड़ खांड चीनी—ता० २४ मार्च से ८ अप्रैल तक मन्दी ता० ९ अप्रैल से खरीदो २१ तक अच्छी तेजी बनेगी।

चाँस रुई कपास—ता० २४ मार्च से बेचो १५ दिन में रुई पर १२५ रुपये, १५० रुपये या अधिक मन्दी बन सकती है।

चांस पाट जूट वारडाना—ता० २४ मार्च से ३१ तक मन्दी ता० ३१ मार्च से १५ तक तेजी १५ अ० से बेचान कर दो ता० २१ अप्रैल तक मन्दी खेलने वाले माल कमायेंगे।

चांस धान्यादि दालवाना—ता० २४ मार्च से प्रत्येक धान्यादि दालवाना का स्टाक निकाल दो यहां से गेहूं में २५ रु०, ३० रु० चना में १५ रु० २५ रु० ४० रु० तक मटर, जौ में १२), १५), २०) रु० बाजरा जुवारी, मक्की में १५) २०) तक तूअर (अरहर) में २०), ३०) रु० मोठ, मसूड़ में १०) १५) रु० की मन्दी बन जाना सम्भव है।

चांस किराणा—हल्दी, धनियां, जीरा, अजमाइन मैंथी लाल मिर्च, सोंफ, नमक, सांभर, काली मिर्च, साबूदाना आई मन्दी यथा शक्ति खरीदो भविष्य में जनरल रुख तेजी का रहेगा। अमचूर इमली में अच्छी मन्दी बनेगी।

चांस खुश्क मेवा—काजू, पिस्ता, चिलगोजा, चिरौजी अखरोट, आलू वखारा में पूरा महीना अच्छी मन्दी बनेगी किसमिस, छुआरा, मखाना, खुश्क गोला में पूरा महीना रुख तेजी का रहेगा।

चाँस देशी घी—ता० २४ मार्च से ३१ मार्च तक मन्दी में खरीदो २१ अप्रैल तक २०) ३०) रु० की तेजी बनेगी।

चांस तिलहन तेल वीयो—ता० २४ मार्च से आई तेजी बेचो अथवा ८ दिन के मन्दे लगादो अलसी, अरन्डा में १०), १५) रुपये, तेल मूंगफली, सरसों, सरफी में ८) १०) १५) रु० तक करड़ी व तिल्ली में १५) २०) रु० तक भविष्य में मन्दी बन जाना सम्भव है। उपरोक्त आंकड़ों से कम अधिक भी लाइन चल सकती है।

चांस तम्बाकू वनसदा आदि—जनरल रुख तेजी का रहेगा। ता० १५ अप्रैल से मन्दी बनेगी भविष्य में अच्छी मन्दी आयेगी।

धर्म की स्थापना युक्तिसंगत जीवन पद्धति के रूप में होनी चाहिए—राधाकृष्णन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मासिक भविष्य—

चैत्र

(२१ मार्च से २० अप्रैल तक)

मनु

[यह मासिक फल गोचर पद्धति से कहा गया है, यदि यह आपकी दशा भुक्ति के अनुकूल हो तो विशुद्ध रूप से फलीभूत होगा। दशा भुक्ति को जानने के लिए ज्योतिष टाइम्स, गणित विभाग को लिखें—सम्पादक]

ग्रह गति

१३ अप्रैल को सूर्य मेष में, ९ अप्रैल को मंगल मिथुन में, ७ अप्रैल को बुध मीन में, ३० मार्च को शुक्र कुम्भ में, गुरु सारा समय कुम्भ में, शनि सारा समय मिथुन में, राहु सारा समय वृश्चिक में प्रवेश करेगा।

मेष

जन्माक्षर—चू चे चो ल अ

आपका सूर्य द्वादश तथा लग्न में, मंगल द्वितीय तथा तृतीय में, बुध एकादश तथा द्वादश में, गुरु दशम, शुक्र एकादश, शनि तृतीय तथा राहु अष्टम में। मित्रों से सम्पर्क अधिक, लेकिन हानि दायक सम्भव, मंगल की स्थिति ९ अप्रैल से पहले यश और धन प्रद है। विद्यार्थियों के लिये सफलतादायक है। चन्द्रमा की निर्बलता के कारण भूमि प्राप्ति का अच्छा योग नहीं। यह समय समान के लिये विशेष कष्टप्रद है। स्त्री प्रभा और घरेलू प्रेम के लिए अनुकूल। राज्य कर्मचारी वर्ग के लिये प्रतिकूल। जानबूझ कर राज्य विरोध करने का योग है अतः समय से काम लें।

व्यापारी वर्ग को पहले हानि तथा पीछे लाभ की संभावना है।

वृषभ

जन्माक्षर—इ उ ए ओ ब

आपका सूर्य एकादश तथा द्वादश में, मंगल लग्न तथा द्वितीय में, बुध दशम तथा एकादश में, गुरु नवम, शुक्र दशम, शनि द्वितीय तथा राहु सप्तम भाव में।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चन्द्रमा तथा लग्न पीड़ित हैं शरीर में पित्त रोग अथवा चोट का भय है। गुरु की दृष्टि सहायक है। धन स्थान में पापग्रहों की स्थिति के कारण धन हानि का योग है विद्या के लिये उत्तम, मित्रों से लाभ हो परन्तु बहुत थोड़ा, क्षेत्र प्राप्ति का योग। स्त्री वर्ग के लिए उत्तम।

व्यापारी वर्ग को मशीनरी, रेडियो तथा बिजली के सामान आदि से लाभ का योग। राज्य कर्मचारी वर्ग किसी उच्चाधिकारी के वैमनस्य का शिकार हो सकते हैं, अतः इस संबंध में सचेत रहें। धार्मिक कृत्यों में धार्मिकता कम हो हठधर्मी अधिक हो। शनि की स्थिति तथा मंगल की स्थिति के कारण पत्नी पर व्यय की अधिक संभावना है।

मिथुन

जन्माक्षर—क घ छ ह

आपका सूर्य दशम तथा एकादश में, मंगल द्वादश तथा लग्न में, बुध नवम तथा दशम, गुरु अष्टम, शुक्र नवम शनि लग्न तथा राहु छठे भाव में।

मंगल षष्ठेश होता हुआ लग्न तथा चन्द्र आदि पर प्रभाव डाल रहा है अतः शरीर को चोट आदि का डर है। मंगल की पूजा तथा दान करें। द्वितीयेश पाप प्रभाव में है तथा विद्या स्थान पर राहु की दृष्टि है अतः विद्या में सफलता कठिनता से है। शनि का प्रभाव तृतीय तथा तृतीयेश दोनों पर है। प्रतिष्ठित मित्रों से निराशा का योग है। भूमि प्राप्ति का भी कुछ योग है। गुरु की नीच स्थिति आदि के कारण व्यापारी वर्ग को व्यापार में हानि का योग है। राज्याधिकारियों की ओर से भी अच्छे व्यवहार की आशा नहीं करनी चाहिये। लाल रंग की वस्तुओं से कुछ लाभ की आशा है बिजली के समान से भी लाभ संभव है। स्त्री वर्ग को पति के सुख में बहुत हानि की संभावना है क्योंकि गुरु स्वयं पति रूप होता हुआ सप्तनेश होकर अनिष्ट स्थिति में है।

कर्क

जन्माक्षर—हि हू हे हो उ

आपका सूर्य नवम तथा दशम में, मंगल एकादश तथा द्वादश में, बुध अष्टम तथा नवम, गुरु सप्तम, शुक्र अष्टम, शनि द्वादश तथा राहु पञ्चम भाव में।

चन्द्र पर्याप्त बलवान तथा शुभ दृष्ट है। धन वृद्धि की आशा करनी चाहिये। स्वास्थ्य में वृद्धि हो।

शनि की दृष्टि के कारण विद्या में बाधा का विशेष योग है, बिना शनि के विशेष उपाय के विद्या में उन्नति संभव प्रतीत नहीं होती। बुध पर शनि की दृष्टि मित्र से निराशा की सूचक है। शुक्र की अष्टम स्थिति भूमि प्राप्ति का योग नहीं बनाती। गुरु के पाप प्रभाव में होने के कारण शत्रुओं के उत्पन्न हो जाने का डर है। व्यापार में वृद्धि की संभावना, यद्यपि व्यय भी अधिक हो। भागीदारों से संबन्धों में मन्दी आने की संभावना है, वैवाहिक जीवन अधिकतर सुखद रहे क्योंकि बलवान चन्द्र की सप्तम भाव तथा गुरु पर पूर्ण दृष्टि है। गुरु पर चन्द्र की दृष्टि के कारण राज्याधिकारियों की ओर से अनुकूलता तथा लाभ रहे। मूंगा पहनने से लाभ अधिक रहने की संभावना है।

सिंह

जन्माक्षर—म ट टी टू टे

आपका अष्टम तथा नवम भाव में मंगल, दशम तथा एकादश में, बुध तथा अष्टम में गुरु छठे, शुक्र सातवे शनि एकादश तथा राहु चतुर्थ भाव में।

सूर्य की अष्टम भाव में स्थिति है। यह स्थिति मान प्रतिष्ठा में कमी करवाती है अतः शुद्ध सोने की अंगूठी पहनना उपयुक्त रहेगा। या सोने की अंगूठी में माणिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पहना जाये। यही स्थिति बुध द्वारा विद्या में बाधा दिला सकती है। शुक्र सप्तम स्थान में चन्द्र द्वारा बलवान है। मित्रों तथा भ्रातृ वर्ग से लाभ की आशा करनी चाहिये। चतुर्देश होकर मंगल एकादश स्थान में स्थित है यह योग भूमि प्राप्ति के लिये अच्छा है। अचानक भूमि प्राप्त हो। गुरु की छठे भाव में स्थित पुत्र से विरोध। घरेलू जीवन में वातावरण अच्छा। व्यापारी वर्ग को लोहे तथा बिजली के सामान से लाभ। राज्य कर्मचारी वर्ग की स्थिति में सुधार हो परन्तु थोड़ा। भाग्य में थोड़ी वृद्धि की सम्भावना है।

कन्या

जन्माक्षर—टी श प ष ठ ण

आपका सप्तम तथा अष्टम में, मंगल नवम तथा दशम में, बुध छठे तथा सातवे, गुरु पंचम, शुक्र छठे शनि दशम तथा राहु तृतीय भाव में।

सूर्य और चन्द्रमा दोनो पर राहु केतु का प्रभाव है। शरीर में कुछ कष्ट की सम्भावना है। धन से शुक्र छठे स्थान में स्थित है यह योग आर्थिक अड़चनों का और रूपये पैसे के रुक जाने का है। गुरु की नीचता तथा शनि की दृष्टि के कारण भूमि प्राप्ति का योग नहीं बनता। पंचम भाव पर केतु की दृष्टि सन्तान को चोट दिला सकती है। विद्या प्राप्ति में बाधा का योग है। वैवाहिक जीवन में कलह की उत्पत्ति का भय है क्योंकि सूर्य तथा शनि दोनो का प्रभाव सप्तम भाव पर है। व्यापार में भी हानि का भय है। बुध तथा सूर्य के पीड़ित होने के कारण मान हानि का डर है। पन्ना पहनने से इस दिशा में सुधार हो। राज्य कर्मचारियों के लिये यह समय पदच्युति का है।

तुला

जन्माक्षर—र न नी ने

ग्रह चलन—आपका सूर्य छठे तथा सातवें, मंगल अष्टम तथा नवम बुध पांचवे तथा छठे, गुरु चतुर्थ, शुभ पंचम, शनि नवम तथा राहु द्वितीय भाव में।

राहु का प्रभाव द्वितीय भाव तथा द्वितीयेश दोनों पर होने के कारण विद्या में बाधा का डर है। तृतीयाधिपति गुरु नीच तथा पाप दृष्ट है मित्रों से सचेत रहें उनसे शत्रुत्व की संभावना है। नीच गुरु आपको घर से बाहर रहने पर बाधित कर सकता है। छठे भाव पर शनि आदि के प्रभाव के कारण, शत्रुओं के उत्पन्न हो जाने की सम्भावना है। मंगल पर की दृष्टि के कारण व्यापार में कुछ लाभ ही की सम्भावना है। वैवाहिक जीवन में भी स्थिति कुछ अनुकूल ही रहने की सम्भावना हैं। परन्तु आर्थिक क्षेत्र में सूर्य की स्थिति रुपये को व्यापार में फंसा देने की सूचक है। राज्यकर्मचारियों की स्थिति अचानक बिगड़ जाने का डर है क्योंकि नवनेश बुध पर शनि की दृष्टि है और बुध छठे स्थान में निर्बल है।

वृश्चिक

जन्माक्षर—तो न य यी यु

आपका सूर्य पांचवे तथा छठे, मंगल सप्तम तथा अष्टम, बुध चतुर्थ तथा पंचम, गुरु तृतीय, शुक्र चतुर्थ शनि अष्टम तथा राहु लग्न में।

मंगल की स्थिति काफी बलवान है, मान धन तथा प्रतिष्ठा की सूचक है। गुरु का नीचत्व जहां धन-हानि का सूचक है वहां यह विद्या में हानि का भी सूचक है। मित्रों से भी अच्छे व्यवहार की आशा न रखें। सुख से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अष्टम में और अष्टमेश सुख स्थान में है यह हानि शथा मानसिक व्यथा का सूचक है। परन्तु शत्रुओं से विजय की प्राप्ति है। व्यापारी वर्ग को व्यापार में वृद्धि की आशा करनी चाहिए क्योंकि व्यापार भाव पर दो शुभ ग्रहों अर्थात चन्द्र तथा गुरु की दृष्टि है। इसी शुभ दृष्टि के कारण वैवाहिक जीवन में भी अनुकूलता तथा प्रेम की आशा करनी चाहिये। विदेश जाने का काफी योग है। दशम दशमेश पर शनि की दृष्टि के कारण आप जान बूझकर राज्य अधिकारियों से अथवा राज्य से स्थिति को बिगाड़ सकते है।

धनु

जन्माक्षर—ये यो भ मि मु ध फ ठ भे

आपका सूर्य चतुर्थ तथा पञ्चम, मंगल छठे तथा सातवें, बुध तृतीय तथा चतुर्थ गुरु द्वितीय, शुक्र तृतीय, शनि सप्तम भाव में।

धनेश नीच है ओर लग्न पर पाप प्रभाव है। यह योग स्वास्थ्य को खराब करता है। यही योग आर्थिक क्षेत्र में भी हानि प्रद सिद्ध हो सकता है। मित्रों की स्थिति अभी अनुकूल नहीं। पुत्रों की वृद्धि की आशा रखनी चाहिये। शत्रुओं से सन्धि करने पर आपको विवश होना पड़ेगा आप का व्यवहार इस विषय में सान्त-वना की भावना लिए रहेगा। व्यापार से लाभ की आशा न रखें। शनि के बुध तथा सूर्य पर प्रभाव के कारण वैवाहिक जीवन में अचानक कलह तथा पृथकता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। व्यापार में भागीदारों से कलह की सम्भावना है। शनि की नवम् नवमेश पर दृष्टि इस बात की सूचक है कि आप स्वयं चाहते हैं कि आपकी वर्तमान धन्धे से पृथकता संभव है। राज्यकर्मचारियों को राज्य की ओर से किसी लाभ की आशा नहीं रखनी चाहिये क्योंकि सूर्य तथा बुध शनि दृष्ट हैं।

मकर

जन्माक्षर—यो ग ख ज गि

आपका सूर्य तृतीय तथा चतुर्थ में, मंगल, पंचम तथा छठे, बुध द्वितीय तथा तृतीय, गुरु लग्न में, शुक्र द्वितीय शनि छठे तथा राहु एकादश भाव में।

शनि लग्नेश तथा द्वितीयेश होता हुआ छठे स्थान मे मंगल से युक्त है। यह योग अर्थ की कमी का सूचक है। नीलम पहनने से सम्भवतया इस दिशा में लाभ हो। विद्या में भी यह योग बाधा प्रद है। गुरु लग्न में मित्र कुछ हद तक अनुकूल रहें। मंगल पर गुरु की दृष्टि है। मास के पूर्वार्द्ध में भूमि आदि से लाभ की सम्भावना है। घर में सुख की वृद्धि हो। पंचम भाव में मंगल तथा केतु की स्थिति सन्तान को चोट आदि से कष्ट दे सकती है। शत्रुओं की उत्पत्ति अधिक हो। व्यापार में विशेष वृद्धि हो। व्यापार में राज्य भी सहायक सिद्ध हो। वैवाहिक जीवन में विशेष सुख तथा अनुकूलता की अनुभूति हो। सूर्य विपरीत राज योग बना रहा है। विशेष धन की प्राप्ति का योग है सूर्य तथा बुध पर शनि की दृष्टि के कारण राज्य की ओर से लाभादि की आशा नहीं करनी चाहिये।

कुम्भ

जन्माक्षर—गु गे गो स द

आपका सूर्य द्वितीय तथा तृतीय में, मंगल चतुर्थ तथा पंचम में, बुध लग्न तथा द्वितीय में, गुरु द्वादश, शुक्र धन में, शनि पंचम में तथा राहु दशम में।

लग्नेश और पंचमेश का पारस्परिक परिवर्तन योग है। इस योग के कारण प्रतिभा तथा मन्त्रणा रुचि में वृद्धि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो। द्वितीयेश गुरु द्वादश में नीच है। धन हानि का योग है। पुखराज पहनने से इस दिशा में सुधार हो। यह योग विद्या में बाधा पड़ जाने का भी द्योतक है। मंगल पर गुरु की दृष्टि के कारण किसी मित्र से व्यापार में सहायता मिले। गुरु के पीड़ित होने के कारण मुंह पर रोग आदि की सम्भावना है। शनि तथा सूर्य का बुध पर प्रभाव गर्भ हानि का सूचक है। सप्तम सप्तमेश पर सूर्य की दृष्टि के कारण व्यापार में हानि की संभावना है। यही योग वैवाहिक जीवर में कलह की उत्पत्ति का सूचक है। राज्य की ओर से कुछ सहायता की आशा करनी चाहिए परन्तु अधिक नही।

मीन

जन्माक्षर—दि दु थ झ दे दो चा ची

आपका सूर्य लग्न तथा द्वितीय भाव में, मंगल तृतीय तथा चतुर्थ में, बुध द्वादश तथा लग्न में, गुरु एकादश में, शुक्र द्वादश में, शनि चतुर्थ तथा राहु नबम में।

मंगल का लग्नों पर प्रभाव है अतः चोट लगने का भय हैं। आर्थिक दृष्टि से मंगल पर गुरु की दृष्टि लाभ प्रद है। यही स्थिति विद्या में भी उन्नति दायक है यद्यपि पूर्ण स्थिति (High marks) नहीं। शुक्र की स्थिति के कारण मित्रों तथा भाइयों पर व्यय हो। बुध तथा शनि का व्यन्यय के कारण मित्र तथा सम्बन्धियों पर अधिक व्यय हो। यह योग भूमि प्राप्ति में सहायक नहीं है। शत्रु उत्पन्न हो परन्तु कुछ बिगाड़ न सके। बुध के कारण उत्साह में वृद्धि हो। परन्तु घरेलू वैवाहिक जीवन में पारस्परिक कलह की सम्भावना है। मंगल की निज राशि पर दृष्टि के कारण भाग्य में वृद्धि हो। अकस्मात विशेष लाभ की प्राप्ति हो। राज्य की ओर से अनुकूलता रहे।

कुम्भ-महापर्व हरिद्वार

पद्मिनी-नायको मेष कुम्भराशि गतो गुरुः।
गंगाद्वारे भवेद्योगः कुम्भनामा तदोत्तम :॥

कुम्भ राशिस्थ बृहस्पति में जिस दिन सूर्य देव मेष राशि में प्रवेश करते हैं, उस दिन हरिद्वार में कुम्भ महा-पर्व का योग बनता है। इस महापर्व की पृष्ठभूमि में एक पौराणिक कथानक भी है—किवदंती है कि देवताओं एवं दैत्यों द्वारा समुद्र का मंथन करने पर अमृत कुम्भ को लेकर धन्वन्तरि जी का आविर्भाव हुआ। तब देवताओं का संकेत प्राप्त कर पुत्र जयन्त उस घड़े को लेकर चल दिया। जब राक्षसों ने देखों तो उन्होंने उसका पीछा किया। तत्पश्चात देवतावों और दानवों में बारह सौर वर्ष तक आपस में भारी युद्ध चलता रहा। देवताओं ने अमृत-घट को प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक इन चार स्थानों पर सुरक्षित रूप से गुप्त रख दिया। सूर्य भगवान ने इसको फटने से बचाया और बृहस्पति ने इसकी रक्षा की।

इस वर्ष वि० संवत् २०३१ में १३ अप्रैल सन् १९७४ ई० तदनुसार बैशाख कृष्ण सप्तमी शनिबार को यह योग बनता है। परम्परा के अनुसार महापर्व का स्नान इसी दिन होगा क्योंकि मेष संक्रान्ति भी इसी दिन है, लेकिन मेष संक्रान्ति का पुण्यकाल १४ अप्रैल को मध्यान्ह से पूर्व है अतः उस दिन भी गंगा में स्नान करना विशेष पुण्यप्रद होगा।

कुम्भ-राशि-गतो जीवः यदिने मेषगो रविः।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृति-वर्जनम् ॥
किंच-अश्वमेघ सहस्त्राणि वाजपेय-शसानिच।
लक्षं-प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भ-स्नानेन वे फलम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

TEJPAULS PRIVATE LTD.

Wire Drawers & Galvanizers

225, SANT TUKARAM ROAD

IRON MARKET

BOMBAY—INDIA

PROMOTORS OF

ONE CRORE MINI-STEEL PLANT

Raipur Wires & Steel Ltd.

AT

RAIPUR (M.P.)

TELE : BOMBAY [328875, 330801,

RAIPUR [2293, 2512,

TELEGRAMS : STEEL-DEPOT

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

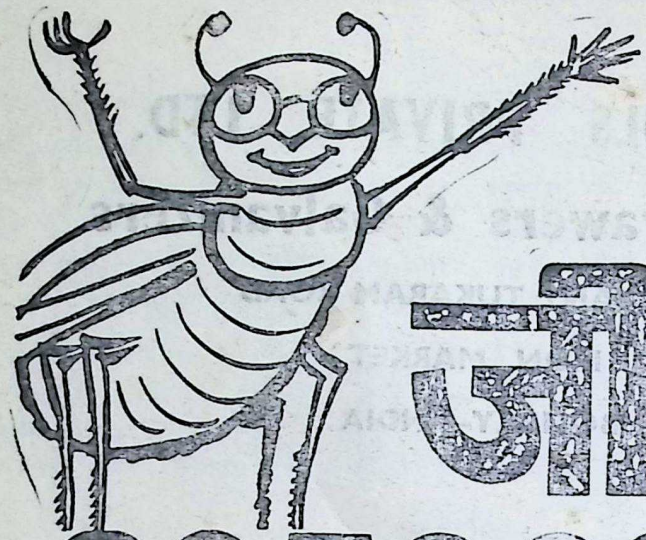

जीतिये 20,50,000 रु० के इनाम

डाकघर बचत बैंक इनामी योजना में शामिल होइये

इनाम के इनाम और जमा राशि पर ब्याज लीजिये

6 अप्रैल, 1974 से पहले 200 रु० या इससे अधिक रकम के साथ डाकघर बचत बैंक खाता खोलिये। 30 सितम्बर, 1974 तक इस रकम को यूं ही जमा रहने दीजिये।

यदि आपका खाता पहले से ही है तो इसमें जमा राशि 6 अप्रैल 1974 से पहले 200 रु० या इससे अधिक कर लीजिये। यदि आप अपने नाम में एक से अधिक खाते खोलते हैं तो इनाम जीतने के आपके अवसर और भी अधिक हो जायेंगे। पर, एक डाकघर में एक से अधिक खाते नहीं होने चाहियें।

याद रखिये, एक व्यक्ति के नाम से सभी खातों में जमा राशि 25,000 रु० से अधिक नहीं होनी चाहिये।

अपने परिवार के हर सदस्य के नाम खाता खोलिये।

प्रथम इनाम 1,00,000 रु०		
5	- दूसरे इनाम प्रत्येक	50,000 रु०
10	- तीसरे इनाम ,,	20,000 रु०
100	- चौथे इनाम ,,	5,000 रु०
1,000	- पांचवें इनाम ,,	500 रु०
10,000	- छठे इनाम ,,	50 रु०

इनामी लाटरी जनवरी, 1975 में निकालो जायेगी

जानकारी के लिये इस पते पर लिखिये :

राष्ट्रीय बचत आयुक्त

पोस्ट बाक्स 96, नागपुर

DAVP 73,031

मुद्रक व प्रकाशक : डा० गोस्वामी गिरिधारीलाल द्वारा संस्कृत स्वाध्याय तथा ज्योतिष विज्ञान मा...
२५/३०, पूर्वी पटेलनगर, नई दिल्ली-८ के लिए लखेरवाल प्रेस, करोलबाग नई दिल्ली-५ द्वारा मुद्रित।
सम्पादक : डा० गोस्वामी गिरिधारीलाल : दूरभाष : ५८३९१९,५८५७०० : Price Re. 1-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu